।। गिरनार मंडन श्री नेमिनाथाय नमः।।

पंन्यास प्रवर श्री हेमवल्लभविजयजी रचित

श्री गिरनारजी महातीर्थ महिमा गर्भित

श्री नव्वाणु प्रकारी पूजा

Scanned by CamScanner

श्री गिरनार मंडन श्री नेमिनाथ भगवान

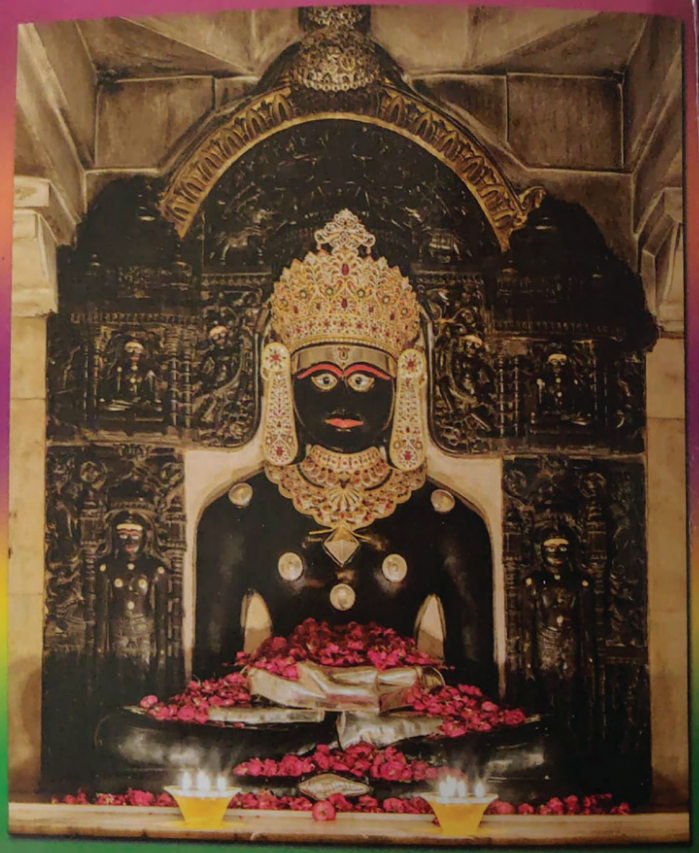

ॐ ह्रीँ अर्हँ श्री नेमिनाथाय नमः

॥ गिरनारमंडन श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री गिरनारजी महातीर्थ महिमा गर्भित

श्री नव्वाणु प्रकारी पूजा

-: रचनाकार :-

युगप्रधान आचार्यसम प.पू पं.प्र.
श्री चन्द्रशेखर विजयजी गणिवर्य के शिष्यरत्न
प.पू.पं. **श्री धर्मरक्षित विजयजी** म.सा के शिष्य
प.पू.पं. **श्री हेमवल्लभ विजयजी** म.सा.

*** प्रकाशक ***

श्री गिरनार नव्वाणुं वि.सं.२०७३ के आयोजक
श्री समस्त आन्ध्रप्रदेश जैन श्वे. संघ(आ.प्र.)
(श्री गुन्टूर, विजयवाडा, नेल्लोर, काकिनाडा, राजमहेन्द्री, तेनाली, ऐलुर, तणुकु, नरसापुर, पीठापुरम, सामलकोट, रामचन्द्रपुरम, गुडिवाडा, कोव्वूर आदि श्री संघ)
संयोजक : श्री जैन युवा संगठन- गुन्टूर (आ.प्र.)

हिन्दी प्रथम आवृत्ती २०००,
वि.सं. २०७३ मगसर वद ५,१७ नवंबर , २०१६
मूल्य : तीर्थ भक्ति

✻ प्राप्ति स्थान ✻

✻ श्री जैन युवा संगठन C/o. शा कनकराज एन्ड सन्स
क्लाथ बाजार, गुन्टूर-3, (आ.प्र.)
फोन: 2225086, 9848813781

✻ शा पन्नालाल देवीचन्दजी C/o. शा देवीचन्द एन्ड सन्स,
मडुम लेन, विजयवाडा-1 (आ.प्र.)
फोन : 99515 74074

✻ शा किशोरकुमार दलीचन्दजी C/o. आन्ध्रा ज्वेलरी
गिड्डंगी स्ट्रीट, नेल्लोर (आ.प्र.)
सेल : 98667 22854

✻ संघवी महावीरकुमार मोहनलालजी
C/o. जे. एम. ज्वेलर्स, के.वी.आर. स्वामी रोड, राजमहेन्द्रवरम्- 1
(आ.प्र.) सेल :93979 19592

✻ शा राजेन्द्रकुमार भंवरलालजी तलावत
C/o. रेणु बैंकर्स, मार्केट स्ट्रीट, काकिनाडा (आ.प्र.)
सेल : 94416 07739 (आ.प्र.)

✻ श्री गिरनार महातीर्थ विकास समिति
हेमाभाई नो वंडो, उपरकोट रोड, जगमाल चौक, जुनागढ- 1
फोन: 0285-2622924, सेल : 94291 59802

✻ सेठ देवचंद लक्ष्मीचंद नी पेढी
जैन श्वेताम्बर मंदिर, भवनाथ तलेटी, जुनागढ- 362 001
फोन : 0285-2620059

✻ धर्मरसिक तीर्थ वाटिका
आ. नररत्नसूरी मार्ग, एकता टॉवर के पास, वासणा बेरेज रोड,
वासणा- अहमदाबाद-380 007, फोन : 079-26608837

✻ वर्धमान संस्कार धाम
पहला माला, 112, जगन्नाथ शंकर शेठ रोड, गिरगामचर्च के पास,
मुंबई-400 004 , फोन नं. 022-23670974

✻ समकित ग्रुप
जैन देरासर के पास, जवाहर नगर , गोरेगाँव(वे.), मुंबई
सेल : 98201 21195

✻ श्री अखिल भारतीय संस्कृति रक्षक दल
सुभाष चौक, गोपीपूरा- सुरत, फोन : 0261-2599337

✻ मेहता डेयरी
तलेटी रोड, पालीताणा, फोन : 02848-252232

✻ श्री जयेश भाई चुडगर
सोहम् ज्वेलर्स, जैन देरासर के बाजु में, एम.जी.रोड, वडोडरा
फोन : 0265-2425060, 94263 86313

✻ मुद्रक ✻
चेतन ग्राफिक्स- गुन्टूर
फोन :0863(ऑ.)2224914, (नि.) 2220914, सेल :9440373914

* प्रस्तावना *

प.पू. पं.प्र. श्री धर्मरक्षितविजयजी म.सा. एवं प.पू.पं.प्र. श्री हेमवल्लभ विजयजी म.सा. के तपोमय संकल्प और प्रयत्नों से गिरनार तीर्थ की महिमा की जानकारी समस्त भारत के संघो में धीरे-धीरे फैल रही है। पूज्य श्री की प्रेरणा से हमारे आन्ध्रप्रदेश के कई शहरों में "गिरनार की भाव-यात्रा" हुई और सब संघों ने मिलकर वि.सं. २०७३ की गिरनार तीर्थ की 99 यात्रा का आयोजन करने का निर्णय लिया।

चुंकि हमारे आन्ध्रप्रदेश और दक्षिण भारत में ज्यादातर हिन्दी भाषा का उपयोग होता है तो पूज्यश्री की भावनानुसार 'श्री गिरनार महातीर्थ की 99 प्रकारी पूजा" की हिन्दी आवृत्ति का प्रथम प्रकाशन करवाकर हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

हम आशा करते है कि यह " गिरनार 99 प्रकारी पूजा " की हिन्दी पुस्तक सभी के लिए उपयोगी बनेगी और सब को गिरनार तीर्थ से प्रिती बढाने में कारणभूत बनेगी।।

हम पूज्यश्री के सदैव आभारी रहेंगे जिन्होंने हमें " गिरनार 99 यात्रा-२०७३" के आयोजन एवं इस पुस्तक के प्रकाशन करने के लिए प्रेरणा एवं आर्शीवाद दिये।

सधन्यवाद...

श्री समस्त आन्ध्रप्रदेश जैन श्वेताम्बर संघ

-: विनम्र निवेदन :-

जिस प्रकार शत्रुंजय और शंखेश्वरजी में पूनम की यात्रा का महत्व है, उसी प्रकार गिरनारजी में अमावस की यात्रा का महत्व है। आपसे निवेदन है कि हर अमावस को गिरनार की यात्रा करने जरुर पधारे, और अपने शहर में हर अमावस को गिरनार की ९९ प्रकारी पूजा जरुर पढ़ावे।

गिरनार नो महिमा न्यारो... तेनो गाता ना आवे आरो...

नित्यानित्यस्थावरजंगमतीर्थाधिकं, जगत् त्रितये ।
पर्वसु ससुरेन्द्रार्च्यः, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥

(श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक -२०)

तीन जगत में रहे नित्य, अनित्य अर्थात् शाश्वत अशाश्वत स्थावर, जंगम तीर्थो में जो अधिक श्रेष्ठ है और पर्व के दिनों में देवो के साथ इन्द्र भी जिनकी पूजा करते है, वह गिरनार गिरिराज जयवंत हैं ।

स्वर्भूभूवस्थचैत्ये यस्याकारं सुरासुरनरेशाः
तं पूजयन्ति सततं, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥

(श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-५)

स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक के चैत्यो में सुर, असुर और राजा जिनकी आकृति को नित्य पूजते है वह श्री गिरनार गिरिराज जयवंत है।

अन्यस्था अपि भविनो, यद्ध्यानाद् घातिकर्ममलमुक्तः ।
सेत्स्यन्ति भवचतुष्के, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥

(श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-१९)

दुसरे स्थानों में भी रहे हुए (मतलब गिरनार से दूर, घर-दूकान, देश- विदेश या किसी भी स्थान में रहकर, भी जो भव्यात्माएँ गिरनार का ध्यान करते है वो आत्मा लगे हुये घातीकर्म के मैल को दूर करके चार भवों में मोक्ष प्राप्त करते है, ऐसा श्री गिरनार गिरिराज जयवंत है।

अन्यत्रापि स्थितः प्राणी, ध्यायन्नेनं गिरीश्वरम्।
आगामिनि भवे भावी, चतुर्थे किल केवली।।

(वस्तुपाल चरित्र प्रस्ताव-५, श्लोक -८२)

अन्य स्थान में (गिरनार के अलावा रहे हुए) जो आत्माएँ इस गिरनार गिरवर का ध्यान करते है वो अगले चार भवों में केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष पाते हैं।

महातीर्थमिदं तेन, सर्वपापहरं स्मृतम् ।
शत्रुंजयगिरेरस्य, वन्दने सदृश फलम् ।।
विधिनास्या सुतीर्थस्य, सिद्धान्तोक्तेन भावतः ।
एकशोऽपि कृता यात्रा, दत्ते मुक्तिं भवान्तरात् ।।

(वस्तुपाल चरित्र प्रस्ताव-५, श्लोक -८०/८१)

गिरनारजी की अद्‌भुत महिमा होने से इस गिरिवर को सर्व पापों को हरण करने वाला कहा गया है, एवम् शत्रुंजय और गिरनार के वंदन का समान फल बताया गया है।

इस गिरनार की शास्त्रोक्त भावपूर्वक एक भी यात्रा करने से भवान्तर में मुक्तिपद देने वाला बनता है ।

गिरनार तीर्थ की यात्रा साल में कम से कम एकबार करने का संकल्प जरूर करे ।

प्राक्कथन

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार,
एक गढ़ ऋषभ समोसर्या, एक गढ़ नेमकुमार।

शैशवकाल से उपरोक्त दोहे से परिचित समस्त जैन संघ शास्त्रो के स्वाध्याय और पूज्यों के प्रवचनों के माध्यम से शत्रुंजय महातीर्थ की महिमा को जानते है और मानते है।

दूसरे जग प्रसिद्ध श्री गिरनारजी महातीर्थ के माहात्म्य से परिचित ऐसे पूर्व पुरुषों द्वारा भूतकाल में इस महातीर्थ के उत्कर्ष और संरक्षण के लिये अनुमोदनीय कई प्रयास हुये थे और उसका सुवर्ण इतिहास आज भी अपने समक्ष दृष्टि गोचर हो रहा है। मगर पूर्व सौ बरसों से चर्तुविध संघ इस तीर्थ के माहात्म्य से अन्जान होने के कारण इस महिमावंत महातीर्थ की यथायोग्य भक्ति से वंचित रह गया है ।

जहाँ से अगली चौवीशी के चौवीश तीर्थंकर परमात्मा मोक्ष पाने वाले है। वर्तमान चौवीशी के २२ वें तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ भगवान सहित भूतकाल के अनंत तीर्थंकरों के दीक्षा केवल और मोक्ष कल्याणक हुये थे, ऐसे महाप्रभावशाली तीर्थ की महिमा, सब जैनों के घर-घर में और अणु-परमाणु में स्थापित हो, वैसे शुभभाव से इस माहात्म्य को ज्यादा लोगों में प्रचलित करने के लिये सरलता से काव्य रुप में और राग पूर्वक गेय काव्य स्वरुप में प्रकाशित करने का अल्प प्रयास किया गया हैं।

इस पूजा की रचना में जो कोई भी खुबियाँ है वह सबपूज्यों

की कृपा से है। भूतकाल में ग्रंथ रचनाकार पूर्वाचार्य, उपरोक्त ग्रंथो की माहिती प्रदान करने वाले सभी भव्यात्माओं, इस ग्रंथ को यहाँ तक पहुँचाने वाले श्रावकवर्ग और हर अवसर पर शब्द और भाव वृद्धि कराने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से जो भी इस सर्जन कार्य में पूरक हुए हैं, उन सभी पुण्यात्माओं का आभार है।

पाण्डित्यं विद्यते नात्र, न लालित्यं न कल्पना।
केवलं शब्दपुष्पाणां, ग्रथन भक्तितः कृतम् ।।

मेरे पास एसी कोई विद्धता नहीं है, या भाषा में भी कोई विशेषता नहीं हैं और कुशल कविओं जैसी अनमोल कल्पनाए भी न होते हुये सिर्फ इस तीर्थ के प्रति पागल प्रीति और अटुट, अपूर्व भक्ति के वश पुष्पों को भावपूर्ण सुतर धागे से बनाने की बाल कोशिश की है, और सुज्ञजन उस को यथावत् ना रख कर कोई त्रृटिओं को बताकर इस बाल चेष्टा को स्वीकार करे, ऐसी अंत:करण से प्रार्थना है।

आज कल वर्तमान काल में पूरे विश्व में पश्चिमी संस्कृति का प्रदुषित तुफान चल पडा है। उसी कारण समस्त विश्व पाँचों इन्द्रियों की विषय वासना को भोगने में तल्लिन हो चूका है, ऐसे समय इस महातीर्थ की आराधना एवम् काम विजेता ''बाल बह्मचारी '' श्री नेमिनाथ परमात्मा की साधना –आराधना और उपासना इस विषय वासना के विष को दूर करने में समर्थ बन सकता है। इस लिये समस्त जैन संघ में येन–केन प्रकार से इन परमतत्त्वों की आराधना और उपासना में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो ऐसी अंतर की अभिलाषा है।

जिनाआज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा हो तो मन–वचन–काया से त्रिविध– त्रिविध क्षमा चाहता हुँ।

वि.सं. २०६७, मारवाडी चैत्र वद १, फागण वद–१ (धुलेटी) गिरनार तलेटी

लि. भवोदधितारक
गुरुपादरेणु
मुनि हेमवल्लभ विजय

संदर्भ सूचि

१. शत्रुंजय माहात्म्य
२. प्रभावक चरित्र
३. प्रबंध चिंतामणी
४. सम्यक्त्त्व सप्ततिका
५. रैवतक उद्धार प्रबंध
६. प्रबंध कोष
७. चतुर्विंशति प्रबंध
८. कुमारपाल प्रबंध
९. वस्तुपाल चरित्र
१०. रैवतगिरि कल्प संक्षेप
११. रैवतगिरि कल्प
१२. उज्जयंत स्तव
१३. उज्जयंत महातीर्थ कल्प
१४. श्री गिरनार महातीर्थ कल्प
१५. तीर्थमाला संग्रह
१६. पेथडशा चरित्र
१७. रैवतगिरि रास
१८. रैवतगिरि स्पर्शना
१९. अंतकृत् दशा
२०. मध्य ऐशिया और पंजाब में जैन धर्म

श्री गिरनार महातीर्थ यात्रा की विधि

* सबसे पहले गिरनार महातीर्थ की तलेटी में आदिनाथ जिनालय में चैत्यवंदन करना।

* जय तलेटी पर नेमिनाथ आदि परमात्मा की चरण पादुका की देरी में चैत्यवंदन करना

* गिरनार की पहली टूंक कि ओर ३८३९ सिडीयाँ चढने के समय इस पवित्र भूमि की बिलकुल आशातना न हो एवम् मन को पवित्र रखने हेतु टेपरिकार्डर, मोबाइॅल आदि का उपयोग न करे। रास्ते में भी मस्ती-मजाक आदि न करके, परमात्मा का नाम स्मरण करते हुए श्री तीर्थंकर की कल्याणक भूमि की स्पर्शना करने की उत्कृष्ट शुभ भावना के साथ यात्रा करें।

* यात्रा के समय नीचे दृष्टि रखते हुये धीरे-धीरे जयणापूर्वक जीवदया का पालन करना चाहिए ।

* यात्रा दौरान किसी का भी मन कलुषित ना हो और मर्यादा का पालन हो, ऐसी ही वेशभूषा पहनकर ही यात्रा करे।

* यात्रा दौरान किसी के साथ कषाय ना हो और कठोर शब्द ना बोले जाए, इसलिए मौनपूर्वक शान्ति से यात्रा करने का आग्रह रखना।

* पहली टूंक पहुँचके श्री नेमिनाथ परमात्मा के दर्शन करके स्नान के लिये तैयार हो जाना। अगर प्रक्षाल के लिये देर है तो अंदर के तीन मंदिर १. मेरकवशी, २. सगरामसोनी और ३. कुमारपाल के मंदिर में दर्शन पूजन करना। फिर मूलनायकजी की प्रक्षाल पूजा करना और आजुबाजु की देरीयों में पूजा करना। फिर बाहर के मंदिरों के दर्शन -पूजन के लिये जाना और अगर सामान लेके बाहर के मंदिरों की पूजा करने जाओ तो चौमुखजी मंदिर और रहनेमिजी मंदिर की पुजा करके सीधे सहसावन कल्याणकभूमि की ओर जा सकते है। वहाँ समवसरण मंदिर में पूजा चैत्यवंदन करके दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणको की प्राचीन भूमि की पूजा- स्पर्शना करके चैत्यवंदन करके तलेटी की ओर उतरने की शुरुआत भी कर सकते है। सहसावन में भाता का प्रबंध भी है।

मुनिश्री हेमवल्लभ विजयजी कृत

श्री गिरनारजी महातीर्थ महिमा गर्भित श्री नव्वाणु प्रकारी पूजा विधि

जघन्य से कलश ग्रहण करने वाले नव श्रावक
और उत्कृष्ट नव्वाणु श्रावक मानना।

जघन्य से नव जातिके प्रत्येक ११ फल लेके प्रत्येक पूजा में ९ फल रखना, उससे ग्यारह पूजा में ९-९ फल रखने से ९९ फल होगें। उसी तरह नैवेद्य आदि भी जघन्य से ९ जाति से ११-११ नंग लाकर प्रत्येक पूजा में ९-९- नंग रखना। नव्वाणु दीपक वंशमाले धरने के लिये चावल के ९९ साथियें करना।

श्री गिरनार महातीर्थ महिमा गर्भित श्री नव्वाणु प्रकारी पूजा प्रारंभ

* प्रथम पुजा *

:: भूमिका ::

इस पूजा में गिरनारजी महातीर्थ को वंदन करने हेतु गिरनार की ९९ यात्रा का संक्षिप्त में वर्णन करने जा रहे है, और साथ में शास्त्रानुसार गिरनार के छ आरे के समय के विध-विध नाम और प्रमाण का वर्णन किया है। यानि की कौन से आरे में गिरनारजी का क्या नाम है और उस आरे में गिरनारजी की उँचाई कितनी होती है उसकी जानकारी भी दी गई है।

गिरनारजी महातीर्थ के शास्त्रीय छे नाम ही आज उपलब्ध होने से प्राय: शाश्वत ऐसा गिरि अनंतकाल से विद्यमान होने से उस-उस काल में अनंत नामों से पहचाना जाता होगा, मगर वर्तमान में वह नाम अपने पास उपलब्ध न होने के कारण इस गिरि के अनंत गुणों को ध्यान में रखते हुये उसके १०८ नामों की सुंदर रचना की है। उनमें से ९९ नामों के उल्लेख ११ पूजा में ९-९ नामों के हिसाब से प्रत्येक पूजा में किया गया है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य : ।

:: दुहा ::

श्री शाश्वत गिरि शिर धरी, प्रणमी श्री गुरुपाय ,
रैवतगिरि गुण गाइशुं, समरी शारद माय ॥१॥
प्राय: अे गिरि शाश्वतो, महिमानो नहीं पार ,
दीक्षा-केवलने निर्वाण, नेमीश्वर मनोहार ॥२॥
शत्रुंजय तीरथ तणुं, शिखर पंचम सार ,
दायक पंचमनाणनो, गिरिभूषण गिरनार ॥३॥
उत्कृष्ट परिणामें जे करे, यात्रा नव्वाणुं वार ,
पुण्यपूंज करी अेकठो, न लहे फरी अवतार ॥४॥
नवकलशे अभिषेक नव, अेम अेकादश वार ,
पूजा दीठ श्रीफल प्रमुख, अेम नव्वाणु प्रकार ॥५॥

:: ढाल ::

(राग : जिनराज कुं सदा मोरी वंदना)

गिरनारकुं सदा मोरी वंदना रे,
गिरनारकुं सदा मोरी वंदना रे ;
यात्रा नव्वाणुं करतां होवे,
भवोभव पाप निकंदना रे... ॥१॥

छ'री पाली रैवतगिरि आवी,
नेमिनाथ जुहार रे ;
लाख नवकार गणणुं गणीजे,
पूजा नव्वाणु प्रकार रे ... ॥२॥

केवल दीक्षा कल्याणक भूमि
नेमिजिन चैत्य उदार रे ;
प्रदक्षिणा काउस्सग्ग करीजे,
अष्टोत्तर शतवार रे... ॥३॥

चोविहार छट्ठ करी सात यात्रा,
गजपदना जले स्नान रे ;
चौद चैत्य नववार नमीजे,
देववंदन गुणगान रे... ॥४॥

छअे आरे इण गिरिना,
विध विध नाम वखाणो रे,
योजन छव्वीश वीस षोडश दस बे,
छट्ठे चउशत हस्त मानोरे ... ॥५॥

नव्वाणुं गिरि नाम भलेरा,
तेहमां षट् छे मुख्य रे ;
'कैलासगिरी ' थयो पहेले आरे,
'उज्जयंत ' बीजे पूज्य रे ... ॥६॥

त्रीजे आरे 'रैवतगिरि' मोहे,
चोथे 'स्वर्णगिरि' प्रसिद्ध रे ;
इण पावन तीर्थे आवीने,
अनंत तीर्थंकर सिद्ध रे ... ॥७॥

पांचमें आरे 'गिरनार' सोहे,
छट्ठे आरे 'नंदभद्र' जणाय रे ;
'पारसगिरि' 'योगेन्द्र ' 'सनातन',
गिरिवर नाम कहाय रे... ॥८॥

गिरनार भक्ति रंग थकी रे,
उपन्यो नेह अपार रे ;
हेम वदे अे तीरथ सेवंता,
भवजल पार उतार रे ... ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा- केवल सिद्धिदं ,
सदा कल्याणकैः पूतं , वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

॥ इति प्रथम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ९ संपूर्ण॥

* द्वितीय पूजा *

:: भूमिका ::

इस पूजा में गिरनारजी महातीर्थ की सात टूंको के नाम उल्लेख करते हुए साथ में इस गिरिराज की प्रदक्षिणा करने से दुःख और दुर्भाग्य दूर चले जाते है, ऐसा बताने में आया है।

इन सात टूंकों की प्रथम टूंक के उपर महाप्रभावशाली गजपद कुंड आया हुआ है। उसके उद्गम का प्रसंग तथा अत्यंत दुर्गंध वाली दुर्गंधा नाम की स्त्री इस पावन कुंड के निर्मल जल से स्नान करने के प्रभाव से सुरभिपणु प्राप्त करती है, ऐसा बताके, इस पवित्र जल से स्नान, पान और अर्चना द्वारा प्राप्त होने वाले फल की तरफ ध्यान आकर्षित कराने में आया हैं।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

सात टुंक गिरनारनी, आपे सप्तमराज ,
गजपद कुंडनुं पावन जल, कापे कर्मने आज ।।

:: ढाल ::

(राग : गिरिवर दरिशन विरला पावे ...)

गिरनार गिरिवर नयणे निरखे,
पूरव भव केरा पूण्य पसाये ;
परिकम्मा सात टूंक करे जे ,
दुःख दोहग तस दूर पलाये ।।१।।

देवकोट नामे पहेले शिखरे,
अनुपम चउद जिनालय सोहे ;
बीजे अंबाजी गोरख त्रीजे ,
चोथे ओघड मुझ मन मोहे ।।२।।

परमपददायक पंचम शिखरे,
नेम प्रभुजी मोक्षे सिधावे,
छट्ठे अनसुया सातमें कालिका,
सप्त शिखर इम गिरि सुहावे ।।३।।

आवत इन्द्र इण गिरि उपरे,
गजपद ठावीने कुंड बनावे ;
नेमि जिणंदनी पूजा काजे,
त्रिभुवन पावक जल तिंहा लावे ।।४।।

द्विजकुल पामी पूरव भवमां,
साधु दुगंछा करे तीव्र भावे;
कर्मवशे भवरणमां भमीने,
दुर्गंधा दूरभिपणुं पावे ।।५।।

गजपद कुंडनो महिमा सुणीने,
रैवतगिरिवर यात्राओ आवे;
सात दिवस तस पावन जलथी,
स्नान करी सुगंधित थावे ।। ६।।

पावन अे जलपान थी भविना,
सघलां रोगो पलमां जावे;
निरमलनीरथी जिनने अर्ची,
सर्व तीरथ पूजन फल पावे ।।७।।

सुरभी, उदय, तापस, आलंबन,
'परमगिरि' ' श्रीगिरि' कहावे ;
'सप्तशिखर' 'चैतन्यगिरिवर '
'अव्ययगिरि' ना सुरगुण गावे ॥८॥

ध्येय रुपे गिरिवर ध्यावंता,
आनंदघन आतम आराधे ;
हेम परे तप तापे तपीने ,
त्रिभुवन वल्लभ शिवसुख साधे ॥९॥

*** काव्यम् -अनुष्टुप ***

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

॥ इति द्वितिय पूजाभिषेके उत्तरपूजा १८ संपूर्ण॥

* तृतीय पूजा *

:: भूमिका ::

इस पूजा में प्राय: शाश्वत ऐसे गिरनार गिरिवर के जिनालयो के वर्तमान अवसर्पिणी के चौथे आरे में हुए अनेक विविध जिर्णोद्धार एवं मुख्य जिर्णोद्धारो के नाम निर्देश किये है। जिसमें से युगादिदेव ऋषभदेव परमात्मा के पुत्र चक्रवर्ती भरत महाराजा द्वारा सर्वप्रथम जिर्णोद्धार से मंगल प्रारंभ होकर चौथे आरे के मुख्य उद्धार एवं अंतिम उद्धार करने का श्रेय काशमीर देश से संघ लेके आनेवाले रत्न श्रावक के नाम लिखा हुआ है।

आज भी गिरनारजी महातीर्थ उपर मूलनायक बालबह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा की जो प्रतिमा विराजमान है वह श्री रत्न श्रावक द्धारा स्थापित की गई है। पूजा के अंतिम भाग में गिरि के विविध-विविध नामों के उल्लेख के साथ इस गिरि के नाम स्मरण मात्र से और ध्यान करने से प्राप्त होने वाले लाभ की ओर अंगुली दर्शन कराने में आयी है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

भरत क्षेत्रना मानवी, चोथा आरा मोझार ;
जिनवर दरशन लहे, करे आतम उद्धार ।

:: ढाल ::

(राग : सिद्धाचल शिखरे दीवो रे...)

गिरनारे चित्तडुं चोर्युं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे ...
विण दरिसण आयखुं खोयुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे,
आतम उद्धार ने करवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे ...
कीधा उद्धार गिरि गरवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं...।।१।।

भरतेसर पहेला आवे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
नमे चौथे आरे भावे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
तीन कल्याणक नेमना जाणे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
सुरसुंदर चैत्य रचावे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।२।।

दंडवीर्य अष्टम पाटे रे , नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
करी उद्धार नेमनाथ भेटे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
हरि अजितनाथने आंतरे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
चउ उद्धार गिरि शणगारे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।३।।

कोडी सागर लाख अग्यार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
सप्तम सगर उद्धार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
चन्द्रयश चन्द्रप्रभ शासने रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
करे तीर्थोद्धार बहुमाने रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं...।।४।।

चक्रधर शांतिनाथ सुत रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
तस नवम उद्धार हूंत रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
रामचन्द्रनो दसमो उद्धार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
अग्यारमो पांडव सार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।५।।

रत्न श्रावके बारमो कीधो रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु थापी दर्शनामृत पीधुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु बेठा पश्चिमा मुख रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
भांगे भविजनना दु;ख रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।६।।

:: ढाल ::

(राग : सिद्धाचल शिखरे दीवो रे...)

गिरनारे चित्तडुं चोर्युं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे ...
विण दरिसण आयखुं खोयुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे,
आतम उद्धार ने करवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे ...
कीधा उद्धार गिरि गरवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं...।।१।।

भरतेसर पहेला आवे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
नमे चौथे आरे भावे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
तीन कल्याणक नेमना जाणे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
सुरसुंदर चैत्य रचावे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।२।।

दंडवीर्य अष्टम पाटे रे , नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
करी उद्धार नेमनाथ भेटे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
हरि अजितनाथने आंतरे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
चउ उद्धार गिरि शणगारे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।३।।

कोडी सागर लाख अग्यार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
सप्तम सगर उद्धार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
चन्द्रयश चन्द्रप्रभ शासने रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
करे तीर्थोद्धार बहुमाने रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं...।।४।।

चक्रधर शांतिनाथ सुत रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
तस नवम उद्धार हूंत रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
रामचन्द्रनो दसमो उद्धार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
अग्यारमो पांडव सार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।५।।

रत्न श्रावके बारमो कीधो रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु थापी दर्शनामृत पीधुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु बेठा पश्चिमा मुख रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
भांगे भविजनना दु;ख रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।६।।

:: ढाल ::

(राग : सिद्धाचल शिखरे दीवो रे...)

गिरनारे चित्तडुं चोर्युं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे ...
विण दरिसण आयखुं खोयुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे,
आतम उद्धार ने करवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे ...
कीधा उद्धार गिरि गरवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं...।।१।।

भरतेसर पहेला आवे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
नमे चौथे आरे भावे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
तीन कल्याणक नेमना जाणे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
सुरसुंदर चैत्य रचावे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।२।।

दंडवीर्य अष्टम पाटे रे , नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
करी उद्धार नेमनाथ भेटे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
हरि अजितनाथने आंतरे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
चउ उद्धार गिरि शणगारे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।३।।

कोडी सागर लाख अग्यार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
सप्तम सगर उद्धार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
चन्द्रयश चन्द्रप्रभ शासने रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
करे तीर्थोद्धार बहुमाने रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं...।।४।।

चक्रधर शांतिनाथ सुत रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
तस नवम उद्धार हूंत रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
रामचन्द्रनो दसमो उद्धार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
अग्यारमो पांडव सार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।५।।

रत्न श्रावके बारमो कीधो रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु थापी दर्शनामृत पीधुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु बेठा पश्चिमा मुख रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
भांगे भविजनना दु;ख रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ...।।६।।

'ध्रुव' 'परमोदय ' ' निस्तार' रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
'पापहर' 'कल्याणक' सार रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
'वैराग्यगिरि' 'पुण्यदायक' रे नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
'सिद्धपदगिरि' 'दृष्टिदायक' रे नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं ... ।।७।।

नामे निर्मल होवे काया रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
प्रभु ध्याने नाशे जगमायारे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरि दरिसण फरशन योगे रे ,नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
हेम सुखीयो कर्मवियोगे रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे...
गिरनारे चित्तडुं... ।।८।।

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावंत, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं , वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

।। इति तृतीय पूजाभिषेके उत्तरपूजा २७ संपूर्ण।।

* चतुर्थ पूजा *

:: भूमिका ::

इस पूजा में गिरनाजी महातीर्थ के पांचमे आरे में हुए विविध उद्धारों में से मुख्य उद्धार कराने वाले पुण्यात्माओं की नामावली बताई गई है। मगर हरेक उद्धार का उल्लेख यहाँ नहीं लिया है।

पांचवे आरे में गिरनार के उद्धार करानेवालो में प्रथम उद्धार अनार्य देश बेबीलोन के राजा नेबुचंद्रजी थे। नेबुचंद्रजी राजा परमात्मा महावीर के शासन के श्रेणिक महाराजा के मित्र थे । उनके पुत्र आद्रकुमार ने अभयकुमार के परिचय में आकर दीक्षा ग्रहण की थी । पुत्र मुनि आद्रकुमार को खोजने के लिये पिता नेबुचंद्रजी महाराजा भारत आते है। तब जैन धर्म से प्रभावित होके गिरनार उपर के बाल बह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा का जीर्ण हालत में रहे हुये जिनालय को देखकर उन्होनें वहाँ जिर्णोद्धार कराया था।

उसके बाद गिरि के अनेक उद्धार हुये है। जिसमें वर्तमान गिरनारजी के मुलनायक श्री नेमिनाथ परमात्मा के जिनालय का भी उद्धार वि. सं. ११८५ के साल में पाटण नरेश सिद्धराज जयसिंहजी के मंत्री सज्जनजी द्वारा कराया गया और **कर्णविहार** प्रासाद नाम रखा गया। विश्व में मात्र प्राय: एक ही यह प्रासाद श्यामवर्ण के ग्रेनाइट के पत्थरों से निर्मित है। उसके बाद इस तीर्थ के अनेक उद्धार हुये मगर श्री नेमिनाथ

परमात्मा के इस प्रासाद को यथावत् रखकर ही हुये है।

आज से ४५ साल पहले जब नेमिनाथ प्रभु के दिक्षा-केवलज्ञान कल्याणक की पावन भूमि-''सहसावन'' समस्त जैन संघ द्वारा उपेक्षित हो रही थी, तभी तपस्वी सम्राट प.पू. आ. हिमांशुसूरीश्वरजी महाराज साहेब के प्रचंड पुरुषार्थ और पुण्यप्रभाव से इस सहसावन की कल्याणकभूमि की स्मृति के लिये अत्यंत नयनरम्य विशाल समवसरण मंदिर का निर्माण वि. सं. २०४० की साल में करवाया गया है। जिसके कारण आज यह कल्याणक भूमि सुरक्षित है और उसकी महिमा भव्य जीवो के दिलो तक पहुंच चुकी है।

इस तरह अनेक पुण्यात्मा इस तीर्थ के माहात्म्य का श्रवण करके तीर्थ भक्ति के फल स्वरुप सद्गति और सिद्ध गति के भोक्ता बनने में समर्थ हुये हैं।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

पंचम कालना मानवी, हैये हरख अपार ;
निज निज शक्ति थकी, उद्धार करे गिरनार ।

:: ढाल ::

(राग : हे त्रिशलाना जाया ...)

जे गिरनारने ध्याया, दोषो दूर पलाया ;
गिरिवर केरा उद्धार कराया, जीवो सद्गति पाया ...
जे गिरनार... ।।१।।

अनार्यदेश बेबीलोन ना, नेबुचंद्र महाराया (२)
पुत्रमुनि आद्रकुमारने, शोधन काजे आया (२)
नेम्जिनालय जिरण देखी, जिर्णोद्धार कराया ...
जे गिरनार... ।।२।।

बप्पभट्टसूरीश्वर साथे, आमराज गिरि आया (२)
निजसंपत्ति व्यय करीने, शासनशान बढाया (२)
अेक अेक मंदिर सार करीने, हर्षोल्लास धराया...
जे गिरनार... ।।३।।

सिद्धराजनृप सज्जनमंत्री, रैवतगिरिवर आया (२)
गामेगामथी उद्धार काजे, शिल्पीओ बुलाया (२)
कर्णविहार प्रासाद करावी, जगमां कीर्ति पाया...
जे गिरनार... ।।४।।

वस्तुपाल तेजपाल वली, कुमारपाल तिंहा आया (२)
समरसिंह हरपति श्रीमाली, चौदमा सैके आया (२)
जयतिलक सूरि आणा लईने, नेमिभवन समराया...
जे गिरनार... ।।५।।

मालवदेव पंदरमें सैके, कल्याणत्रय रचाया (२)
लक्ष्मीतिलक नरपाल सजावे, पूर्णसिंह मनभाया (२)
चतुर्मुख लक्षोबा करावे, वर्धमान पद्म आया...
जे गिरनार... ।।६।।

शाणराज भुंभव तिंहा आया, इन्द्रनील बनाया (२)
प्रेमा संग्रामसोनी उद्धरिया, मानसिंह अपर बनाया (२)
नरशी केशव वीसमी सदीमां, नीतिसूरि महाराया...
जे गिरनार... ।।७।।

नेमप्रभुए दीक्षा-केवल, सहसावनमें पाया (२)
पावन वह भूमि का महिमा, जबसे ध्यानमें आया (२)
हिमांशुसूरिरायने उसका, तीर्थोद्धार कराया...
जे गिरनार... ।।८।।

आंबडमंत्री मानसिंह मेघजी, पाजगिरि समराया (२)
पेथड-झांझण अे गिरि आया, तीरथ ध्वज लहेराया (२)
नामी अनामी केई पुण्यवान, गिरिवर भक्ति पाया...
जे गिरनार... ।।९।।

गिरिभक्तिनो महिमा मोटो, कहेता नावे पारा (२)
जिनवयणने सूणतां सूणतां, कर दे भवनिस्तारा (२)
आतम अनुभव तत्त्व प्रकाशी, पंचमगति दातारा...
जे गिरनार... ।।१०।।

'इन्द्र' 'निरंजन' 'विश्रामगिरिवर', ' पंचमगिरि' गुणगाया (२)
'भवच्छेदक' ने ' आश्रयगिरिवर','स्वर्ग' 'समत्व' सुखपाया(२)
'अमलगिरि' के जाप ने हेमको, आतमराम बनाया...
जे गिरनार... ।।११।।

(काव्यम्- अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

।। इति चतुर्थ पूजाभिषेके उत्तरपूजा ३६ संपूर्ण ।।

* पंचम पूजा *

इस पूजा के प्रारंभ में तो परमात्मा के संग गाढ प्रिति की बात करके नेमिनाथ प्रभु का मुख देखते ही हृदय में आनंद एवं उल्लास सह उभरते भावों को व्यक्त किया गया है।

वर्तमान में गिरनार के शिखर पर विराजमान श्री नेमीनाथ परमात्मा के प्रतिमा के इतिहास की बाते करके कहा जाता है कि गत चौविशी के सागर नाम के तीसरे तीर्थंकर प्रभु के काल में पंचम देव लोक में इन्द्र द्वारा भराई हुई यह प्रतिमाजी है, जो वर्तमान विश्व में प्राय: यह एक मात्र प्रतिमा होगी जो ब्रह्मलोक के देवों द्वारा तैयार की गई और असंख्याता सालों तक पांचवे देवलोक में पूजी हुई है। यहाँ पूजा की रचना में शब्दों और अर्थ की सुंदर गुंथणी करके '' हरि'' शब्द का अर्थ एक इन्द्र महाराजा और दूसरा अर्थ कृष्ण महाराजा कहके पंक्ति को एकदम रोचक

बनाया गया है।

पांचमे देवलोकमें पूजी हुई यह प्रतिमा इन्द्र महाराजा द्वारा बाल बह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु की सूचना से श्री कृष्ण महाराजा के गृह चैत्य में बिराजमान की गई थी, उसके बाद द्वारका नगरी के दाह के समय इस प्रतिमाजी को शासन अधिष्ठायिका अंबिकादेवी गिरनार की गुफा में बिराजमान करती है। बाद में रत्न श्रावक को अर्पण करती है, उसके पश्चात प्रभुजी को प्रथम टुंक पर अंदाजित ८५ हजार साल पूर्व स्थापना कराई थी, जो आज भी गिरनार उपर विराजमान है।

ऐसे गौरवशाली गिरनार को रोम-रोम और श्वासोश्वास में स्थापित करके जाप करने से यह भवसागर तैरना अति सरल हो सकता है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

नयन निरुपम जेमना, रमणीय रुप देदार ;
अेवा नेमिनाथथी, शोभे गढ गिरनार ।

:: ढाल ::

(राग : कयुं कर भक्ति करुं प्रभु तेरी...)

नेमि निरंजन किमही न विसरे,
मनमोहनकी मोहनगारी,
मूरत देखी हियडुं हरखे ॥१॥

गत चोविशी त्रीजाप्रभु मुखे,
ब्रह्मेन्द्र निज मुक्ति जाणी ;
अंजनरत्न नेमप्रभुनी,
भरे प्रतिमा भक्ति आणी ॥२॥

असंख्यकाल ते प्रभुने पूजी,
हरि ते प्रतिमा हरिने आपे ;
द्वारिका नाश थतां जिनबिंबने,
अंबिका निज भवने स्थापे ॥३॥

नेम निर्वाण सहसदोय वर्षे,
रत्नाशा 'छ' री पालित आवे ;
गजपद जलना कलशा भरीने,
वेलुबिंब भविजन नवरावे ॥४॥

गलत प्रतिमा प्रभुनी पेखी,
आहार चार रत्न तिंहा त्यागे ;
उपवास करी अेक मासने अंते ,
शासनदेवी अंबिका जागे ॥५॥

वज्र अभेद्य रत्न नी पडिमा,
कलिकाल जाणी आपे रतनने ;
नेमिनाथ मूरत पधरावी,
शोभावे गिरनारगिरिने ॥६॥

'ज्ञानोद्योतगिरि' ' गुणनिधि'
'स्वयंप्रभ' नामें पाप पलाये ;
'अपूर्वगिरि' 'पूर्णानंदगिरिवर'
'अनुपमगिरि' परे मुगते जाये ॥७॥

'प्रभंजनगिरि' 'प्रभवगिरिवर',
शोभे महितल अदभूत काये ;
'अक्षयगिरि' अे सोरठदेशनी,
पृथ्वी सघली पावन थाये ॥८॥

रोमे रोमे गिरनार गुंजे,
श्वासे श्वासे नेमिनाथ बिराजे ;
हेमवल्लभ कहे नाम प्रभुनुं,
जपीअे भवजल तरवा काजे ॥९॥

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं , वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

॥ इति पंचम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ४५ संपूर्ण॥

षष्ठम पूजा *

:: भूमिका ::

इस पूजा में गिरनार माहात्म्य की बाते करते हुए प्रथम एक बात कहने में आयी है कि, जो गिरनार का साथ मिले और नेमिनाथ प्रभु का हाथ मस्तक पर रह जाये तो इस आत्मा को जगत में कौन सी बात की कमी हो सकती है ?

गिरि की महिमा बताते हुये बताया जाता है कि अन्य किसी भी स्थान पर रहकर भी जो गिरनार का ध्यान करने में आये तो अनादिकाल से चर्तुगति में भ्रमण करती ये आत्मा चौथे भव में ही मुक्तिपद पाने के लिये समर्थ हो सकती है। इस गिरि के शरण में जाकर कितने ही पापी-घातक-व्यसनी आत्मा शाश्वत सुख के भोक्ता बन चुके है। जिनशासन के कई वीरलो ने इस तीर्थं की भक्ति से खुद के मानवभव को सफल किया हुआ है।

अरे ! जो पक्षी की छाया भी इस गिरिवर पर पडे तो उनकी आत्मा का दुर्गति का भ्रमण भी अटक जाता है और त्रस-स्थावर जो भी तिर्यंच जीव इस गिरि के सानिध्य में रहते है, उनका परमपद तरफ के गमन का प्रारंभ होकर, कर्ममल को दूर करके वे जल्दी मुक्ति गामी होते है।

और अंत में अति सुंदर बात की है कि जैसे पारसमणी के स्पर्श मात्र से लोहा भी कंचन अर्थात् सुवर्ण हो जाता है और हेम

यानी सुवर्ण जैसे गुण होते है ऐसे ही गुणों को प्राप्त करता है, ऐसे ही रैवतगिरि की स्पर्श मात्र से अनादिकाल का भव भ्रमण करते समय लगे हुये अशुद्ध कर्ममल से दुषित हुआ शुद्ध स्वरूप आत्मा जगत में वल्लभ अर्थात् प्रिय ऐसे वीतराग स्थिती को पाकर मोक्ष पद को प्राप्त करता है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

:: दोहा ::

अहो अहो अे गिरनारनी, स्तवना अति सुखदाय ;
पूजो वंदो शुभभावथी, पातिक सवि दूर पलाय ।

:: ढाल ::

(राग: ऋषभ जिनराज मुज ...)(जगने जादवा...)

साथ गिरनारनो हाथ नेमनाथ नो,
होय जो मस्तके तो शुं तोटो ;
अन्य स्थाने रही ध्यावे रैवतगिरि,
चौथे भव पामतो मोक्ष मोटो... ।।१।।

मात तात घातकी पातकी अति घणो,
राय भीमसेन गिरनार आवे,
मुनि बनी मौनधरी अष्टदिन तप तपी,
उज्जयंतगिरिअे मुगति पावे ... ।।२।।

वस्तुपाल तेजपाल मंत्री साजनने,
धार, पेथड श्रावक भीमो ;
तीर्थभक्ति करी तन मन धन थकी,
मनुज अवतार तस सफल कीनो... ।।३।।

छाया पण पक्षीनी आवी पडे गिरिवरे,
भ्रमण दुर्गति तणा नाश थावे ;
जल थल खेचरा इण गिरि पर रही ,
त्रीजे भव मोक्ष मोझार जावे... ।।४।।

व्यक्त चेतन रहित पृथ्वी अप तेजसा,
वायु पादप गिरनार पामी ;
तीर्थ महिमा थकी कर्म हलवा करी,
सवि थया तेहथी मुगति गामी... ।।५।।

'रत्न' 'प्रमोद' 'प्रशांत' 'पद्मगिरि' ,
'सिद्धशेखर' भवि पाप जावे ;
'चन्द्र-सुरज गिरि' 'इन्द्रपर्वतगिरि' ,
'आत्मानंद' गिरिवर कहावे... ।।६।।

कथीर कांचन हुवे पारसना योग थी,
हेम परे शुद्ध निज गुण पावे ;
तिम रैवतगिरि योगथी आतमा ,
पदवी वल्लभ लही मोक्ष जावे... ।।७।।

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं , वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

।। इति षष्ठम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ५४ संपूर्ण।।

* सप्तम पूजा *

:: भूमिका ::

बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु के साथ अविहड प्रीत ऐसी बनी की, अभी एक क्षण भी मन से अगर प्रभु का विस्मरण हो तो हमारे प्राण यह नश्वरदेह छोड के प्रभु के चरणों में चले जायेंगे । बस अभी तो यह प्राण को देह में टिकाने वाले सिर्फ और सिर्फ हमारे नेमप्रभुजी है, उनसे ही हमारा जीवन है वैसे भावों की अभिव्यक्ति इस पूजा में हैं।

नेमि प्रभु एवम् गिरनार की भक्ति करते करते 'हरि' (कृष्ण महाराजा) ने भी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित किया है और आगामी चौवीशी में इसी भरत क्षेत्र में बारहवें तीर्थंकर अममस्वामी बनेंगे।

समतारस का सतत अमृतपान कराने वाले धीर गंभीर ऐसे अनेक गुणों के समंदर रुपी गिरनार और उसके उत्तुंग शिखर पर विराजे हुए श्री नेमिनाथ प्रभु का हर पल और हर क्षण, सोते-जागते निशदिन अविरत ध्यान कर रहे है।

नेमिप्रभु की असीमकृपा से ही दुर्लभ ऐसा मानवभव, सुहावना संयम जीवन और गौरवशाली गिरनारजी का साँनिध्य प्राप्त हुआ है। प्रभुजी के इस उपकार का बदला संपूर्णतया वापस करने का मेरे जैसे पामर जीव के लिये असंभव है, वैसा बताके रचनाकार लिखते है कि इन सभी उपकारों की किंचित् ऋणमुक्ति के लिये मैनें तो अति मुल्यावन ऐसे मन रुपी माणेक को आपके चरणों में गिरवी रख दिया।

पर प्रभु ! यह क्या ? जहाँ एक ओर से आपके अनहद उपकारें में से अंशमात्र भी मुक्त होने का प्रयत्न कर रहा हुँ, वही दुसरी ओर आप कृपालु ! करुणासागर ! मेरे उपर प्रेमरस की वर्षा करके मुझ पर और उपकार कर रहे हो ।

हे देवाधिदेव ! पंगुल ऐसा मैं कब आपके इन उपकारों का पूरा ऋण चुका सकुंगा ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है। बस अभी तो आप के प्रति गाढ श्रद्धा प्रगट हो चुकी है की इस काल के आत्मा का उद्धार सिर्फ और सिर्फ आपके जरीये ही होगा।

और अंत में बहुत सुंदर भाव प्रगट करते है कि हे प्रभु ! आप तो करुणारस के भंडार हो, आप के नयनों में से तो

करुणारस का झरना अविरत बरस रहा है। अभी तो एक ही अरमान है कि आपके करुणासभर नेत्रों की छवी (प्रतिबिंब) मेरे हृदयरूपी दर्पण में आ जाए। बस हमेशा आपके नेत्र युगल में से अविरतपणे झरते करुणारस के स्स्रोत में झीलकर मेरे आतमराम को निशदिन भीगोता रहुँ ।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

गिरनार गिरिनो राजीओ, नेमि निरंजन जोय ;
तन मन आतमनो धणी, दूजो न होवे कोय ।

:: ढाल ::

(राग : मेरो प्रभु पारसनाथ आधार...)

मेरो प्रभु, नेम तुं प्राण आधार,
विसरुं जो प्रभु अेक घडी तो, प्राण रहे ना हमार ।।१।।

भोग त्यजीने जोग लेवाने,नीकल्या नेमकुमार,
गढ गिरनारने घाटे वसिया, ब्रह्मचारी शिरदार ।।२।।

तुज मूरतिनी भक्ति करतां, थाय हरि अेक तार ;
पद तीर्थंकर करे निकाचित, अकल तुज उपगार ।।३।।

समतारस भरीयो गुण दरियो, नेमनाथ गिरनार ;
सुता जागता ध्यावुं निशदिन, श्वासमांहि सोवार ।।४।।

मन माणिककुं सोंप्यूं में तो, मनमोहनने उधार ;
प्रेम व्याज चढ्यो छे इतनो, किम छूटशे किरतार ।।५।।

हारुं नहि तुज बल थकीजी, सिद्धसुख दातार ;
श्रद्धा भरी छे अेक हृदयमां , तुजथी पामीश पार ।।६।।

'आनंदधरगिरि' ' सुखदायी' 'भव्यानंद' मनोहार ;
'परमानंदगिरि' ' इष्टसिद्धिगिरि' 'रामानंद ' जयकार।।७।।

'भव्याकर्षणगिरि' 'दुःखहरगिरि' 'शिवानंद' सुखकार ;
जगनायक नेमिनाथ कहावे, गिरिनायक शणगार ।।८।।

शामलियाकुं अखियन जाणे, करुणारस भंडार ;
हेमवदे प्रभु तुज अखियनकुं, दीयो छबी अवतार ।।९।।

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

।। इति सप्तम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ६३ संपूर्ण।।

❊ अष्टम पूजा ❊

:: भूमिका ::

इस पूजा में भव भवभ्रमण के दुःखों से छुटने के लिये बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा को विनंती की गई है कि प्रभो! आप मुझे इस भवदुःख से बचालो । मुझे अहसास हो रहा

है कि अब तो यह गिरनार गिरिवर ही मेरा एक सहारा है।

गिरनार गिरीवर के स्मरण और सेवण से अनेक पुण्यात्मा शिवसुख के स्वामी बन चुके है जिस में जैन धर्म को अंगिकार की हुई अंबिका, अति हिंसक और मिथ्यात्वी गोमेध ब्राह्मण, अति दुःखी और दरिद्र अशोकचन्द्र की बातो का उल्लेख किया गया है। अंत में परमात्मा के पदकमल में भमरे की तरह रहकर अमृत से भी ज्यादा मीठे ऐसे प्रभु के प्रेमरस का पान रचनाकार कर रहे है और ऐसा वर्णन यहाँ किया गया है ।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

गोमेध यक्ष मा अंबिका, विघ्न निवारणहार ;
अहोनिश भक्ति भावथी, तीर्थ तणी करे सार ।

:: ढाल ::

(राग : बापलडां रे पातिकडां...)

तारो तारो नेमिनाथ मने तारो, भवना दुःखडां वारो रे ;
माहरे मन गिरनार गिरिवर, जाणो अेक सहारो रे... ।।१।।
जैन धर्मी अंबिका परणी, ब्राह्मण कुले जावे रे ;
साधुने पडिलाभी हरखे, पुण्य पोटलीयां पावे रे ... ।।२।।

कटु वचन सासुना सुणीने, सुतदोय लेई घर छोडी रे ;
गिरनार- नेमिनाथ रटतां-रटतां, पडे कूवे करजोडी रे ...।।३।।

अेम शुभध्यानथी उपनी भवने, गिरिअे नेम जुहारे रे ;
थापे शक्र प्रभु परभाविका, शासन विघ्न निवारे रे ... ।।४।।

ब्राह्मण अतिहिंसक मिथ्यात्वी , अति व्याधिअे व्यापतो रे ;
गिरनारगिरिनुं शरणुं पामी, यक्ष गोमेध अे थातो रे ... ।।५।।

अशोकचन्द्र दुःखी दरिद्री, गिरनारे तप तपतो रे ;
आपे अंबिका पारसमणि, राज रिद्धिमां अे रमतो रे ... ।।६।।

संघसहित रैवतगिरि आवे, लेई दीक्षा प्रभु ध्यावे रे ;
घातीअघाती कर्मो खपावे, शिवसुंदरी ने पावे रे ... ।।७।।

'उज्ज्वल' 'आनंद' 'तीर्थोत्तमगिरि', ' महेश्वर','रम्य' जाणो रे,
'बोधिदाय' 'महोद्योत' 'अनुत्तर',प्रशमगिरि ने वखाणो रे...।।८।।

अमृतथी अतिमीठो प्रभुनो, प्रेमनो प्यालो पीधो रे
हेमवल्लभ प्रभु पादपद्मे, भ्रमर परे रस लीधो रे ।।९।।

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावन्तं दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं , वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

।। इति अष्टम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ७२ संपूर्ण।।

❊ नवम पूजा ❊

:: भूमिका ::

इस पूजा में बालबह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु के साथ स्व के अति स्नेहभाव का वर्णन करते हुये गिरनार गिरिवर के उपर हुये प्रभुजी के दीक्षा कल्याणक, साधनाकाल, केवलज्ञान कल्याणक और मोक्ष कल्याणक की बाते सादी सरल और रसप्रद भाषा में प्रस्तुत करके गानेवाले के हृदयकमल तक पहुँचने का एक सफल प्रयोग करने में आया है। साथ-साथ में हरेक कल्याणक अवसरों को दृश्यमय आकृति देने का प्रयत्न किया गया है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

दीक्षा केवल सहसावने, पंचमे गढ निर्वाण ;
पावनभूमिने फरसता, जन्म सफल थयो जाण।

:: ढाल ::

(राग : निरख्यो नेमि जिणंदने...)

तुम सुरीखो दीठो नहिं मन मोहन मेरे,
जगमां देव दयाल रे सुण शामल प्यारे ,
पशु तणो पोकार सुणी मन मोहन मेरे,
छोड चले राजुलनार रे सुण शामल प्यारे ।।१।।

दीन दुखीया सुखीया कीधा मन मोहन मेरे,
धन दौलत वरसीदान रे सुण शामल प्यारे,
रैवतगिरि सहसावने मन मोहन मेरे,
सहस पुरुष संगाथ रे सुण शामल प्यारे ।।२।।

अजुआली श्रावण छट्ठे मन मोहन मेरे,
सजे संजम शणगार रे सुण शामल प्यारे,
दिन चोपन करी साधना मन मोहन मेरे,
करे पावन गढ गिरनार रे सुण शामल प्यारे ।।३।।

भाद्रवदी अमासना मन मोहन मेरे,
बाले घाती तमाम रे सुण शामल प्यारे,
समवसरण सुरवर रचे मन मोहन मेरे,
चोत्रिस अतिशय ताम रे सुण शामल प्यारे ।।४।।

त्रिभुवन तारकपद लही मन मोहनमेरे,
करे जगत उपकार रे सुण शामल प्यारे ,
मधुरगीरा जिनवर सुणी मन मोहन मेरे,
भव तरीया नरनार रे सुण शामल प्यारे ।।५।।

पंचमशिखर गिरनारे मन मोहन मेरे,
पांचशो छत्रीस साथ रे सुण शामल प्यारे,
अषाढ सुद आठम दिने मन मोहन मेरे,
सोहे शिववधू संगाथ रे, सुण शामल प्यारे ।।६।।

'मोहभंजक' 'परमार्थगिरि' मन मोहन मेरे,
'शिव स्वरुप ' वखाण रे सुण शामल प्यारे ,
'ललितगिरि' 'अमृतगिरि' मन मोहन मेरे,
'दुर्गतिवारण' जाण रे सुण शामल प्यारे ॥७॥

'कर्मक्षायक' 'अजेयगिरि' मन मोहन मेरे,
'सत्त्वदायक गिरि' जोय रे सुण शामल प्यारे,
गुण अनंत अे गिरितणा मन मोहन मेरे,
पार न पामे कोय रे सुण शामल प्यारे ॥८॥

नेमिनिरंजन साहिबो मन मोहन मेरे
बीजो न आवे दाय रे सुण शामल प्यारे,
कृपा नजर प्रभु ताहरी, मन मोहन मेरे,
हेमने शिवसुख थाय रे सुण शामल प्यारे ॥९॥

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

॥ इति नवम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ८१ संपूर्ण॥

❊ दशम पूजा ❊

:: भूमिका ::

इस पूजा में जग प्रसिद्ध ऐसे गढ गिरनार के आलंबन से और उसके परम सानिध्य में रहकर कितनी ही आत्माएँ सामान्य केवली बनकर अथवा तीर्थंकर पद को प्राप्त करके इस भव सागर के दुसरे पार परमपद को प्राप्त हुये है, उसका प्ररुपण किया हुआ है। जैसे-जैसे इस गिरि का सेवन करने में आता है वैसे कर्मक्षय होते जाते है। इस गिरिवर में बसने मात्र से अनंत त्रस-स्थावर तिर्यंच आत्माएँ भी मुक्तिपुरी की ओर प्रयाण कर चुकी है, ऐसा कहने में आता है।

वर्तमान चौविशी में नेमिप्रभु के दीक्षा केवल और मोक्ष कल्याणक, गत चौविशी में आठ भगवान के दीक्षा -केवल और मोक्ष कल्याणक और दो भगवान के सिर्फ मोक्ष कल्याणक हुए है, आगामी चौविशी में चौवीस प्रभु के मोक्ष कल्याणक और दो प्रभुजी के दीक्षा-केवल कल्याणक होंगे। अभी तक अनंत तीर्थंकर परमात्माओं के दीक्षा-केवल और मोक्ष कल्याणक इस पावन भूमि पर हो चुके है।

अरे ! नेमिप्रभु के शासन में (१) देवकी (आनेवाली चौविसी में ग्यारवें श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान), २. कृष्ण (आनेवाली चौविसी में बारवे श्री अमम्स्वामी भगवान), ३. रोहिणी-बलभद्र की माता (आनेवाली चौविसी में सोलमे श्री चित्रगुप्त परमात्मा),

४. शताली श्रावक (आने वाली चौविसी में अठारवे श्री संवर परमात्मा), ५. द्वैपायन ऋषि (आने वाली चौविसी में उन्निसवें श्री यशोधर परमात्मा), ६. कर्ण (आने वाली चौविसी में बीसवें श्री विजय परमात्मा)

इसके अलावा ४ परमात्मा के नामो में मतांतर का उल्लेख अनेक आगम ग्रंथो में आ रहा है, ऐसा स्पष्ट मार्गदर्शन ''श्री दीपालिका कल्प ग्रंथ'' द्वारा मिल रहा है।

इन सभी पुण्यात्माओं ने गिरनार और नेमिप्रभुजी की भक्ति से जिननामकर्म निकाचीत किया है और अगली चौविसी में इसी भरत क्षेत्र की भूमी पर तीर्थंकर पद को प्राप्त करके यही गिरनार से ही मोक्ष पधारेंगे।

सहसावन में राजीमतीजी, रहनेमि आदि अनेको ने दीक्षा-केवल और मोक्ष गति प्राप्त की है। गिरनार गिरिवर दीक्षा का दातार होने से गजसुकुमाल मुनि, सुमुखादि पंदर कुमार, निषध सारणादि कुमारो, समुद्रविजय-शिवामाता, कृष्ण के सात भाई, कृष्ण की रुक्मणी आदि राणीओं आदि अनेक आत्माओ को उदार दिल से संयम दान किया है। अनंत आत्मा भव पार उतारे है। इसलिये हे भव्यजनो ! इस गौरवशाली गढगिरनार का नित्य ध्यान करो। ऐसा संदेश देने में आ रहा है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

व्रत नाण निर्वाणपद, पाम्या जिन अनंत ;
अन्य अनंतजिन शिववर्या, गिरनार कल्प वदंत ।

:: ढाल ::

(राग : धन धन श्री अरिहंतने रे...)

धन धन श्री गिरनारने रे, तार्या अरिहा अनंत सलूणा ;
अे गिरिवर फरसता रे, आतम निर्मल थाय सलूणा ।।१।।

जिम जिम अे गिरि सेविअे रे, तिम तिम कर्म खपाय सलूणा;
त्रस थावर तस वासथी रे, पामे शिवपद पंथ सलूणा ।।२।।

त्रिकल्याणक भूतकालमां रे, अनंता जिन गिरनार सलूणा ;
वली अनंता प्रभु पामीया रे, निर्वाण पद गिरनार सलूणा।।३।।

गत चौविसीमां त्रण थया रे, नेमीश्वर आदि अडना सलूणा ;
अन्य बे जिनवर लहे रे, मोक्ष गमन गिरनार सलूणा ।।४।।

अनंतवीर्य भद्रकृतना रे, दीक्षा-नाण -निर्वाण सलूणा ;
शेष बावीस जिन पामशे रे, मुक्तिपद बहुमान सलूणा ।।५।।

सहसावनमां राजीमती रे, रथनेमि वरे ज्ञान सलूणा ;
कृष्णकेरा सप्त बांधवा रे, रुक्मणी सह अणगार सलूणा।।६।।

गजसुकुमाल मुणिंदनुं रे, व्रत-नाण ने निर्वाण सलूणा ;
सुमुखादि पंदर ग्रहे रे, संसार छेदक व्रत सलूणा ।।७।।

समुद्रविजय शिवामातने रे, विरति केरुं वरदान सलूणा ;
निषध सारणादि कुमारने रे, चारित्र मले गिरनार सलूणा।।८।।

दीक्षा ज्ञान शिवदानथी रे, तार्या अनंत भवपार सलूणा ;
'विरती' 'व्रत' 'संयम 'गिरि रे, 'सर्वज्ञ' 'केवल' 'ज्ञान' सलूणा।।९।।
'निर्वाण' 'तारक' 'शिव' गिरि रे,सेवतां हेम होवे पार सलूणा;
इण कारण भविप्राणीया रे,नित्य ध्यावो गिरनार सलूणा।।१०।।

:: (काव्यम्-अनुष्टुप ::

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

।। इति दशम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ९० संपूर्ण।।

* एकादश पूजा *

:: भूमिका ::

इस पूजा में गौरवशाली गढ-गिरनार की महिमा की अनेक बातों का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है।

वस्तुपाल चरित्र ग्रंथ में जगप्रसिद्ध ऐसे दो महातीर्थ शत्रुंजय और गिरनार की यात्राओं का एक सरीखा फल बताया गया है। शत्रुंजय महातीर्थ के १०८ शिखर में से यह ''रैवतगिरि' ही यानी

की गिरनार महातीर्थ पांचवा शिखर है जो पंचम ज्ञान यानी की केवलज्ञान का प्रदाता है।

इस गिरिवर के स्पर्श मात्र से ही घोर पापीओं के पाप और कुष्ठादि जैसे अनेक रोगों का नाश होता है। ऐसी अचिन्त्य महिमा को जान कर, लेश मात्र भी बुद्धि का उपयोग किये बिना सिर्फ और सिर्फ शुद्धभावपूर्वक इस गिरि को नमन करते हुए रचनाकार लिखते है कि यह अचिन्त्य महिमावंत गिरनार के संपूर्ण गुणों को जानने में असमर्थ होते हुए भी मेरे पूर्वभवों के कोई प्रचंड पुण्य के उदय से इस गिरि का परम सानिध्य मिल पाया है । इसी वजह से देवाधिदेव नेमिनाथ परमात्मा और गिरनार गिरिवर की अनहद लागणी के प्रभाव से मेरा आत्माराम भक्ति के रंग में रंग गया है। बस ! अनिमेष नयन से नेम नगिना को देखते नैन कभी तृप्त नहीं हो रहे है।

ऐसे इस महिमावंत गिरि की भक्ति के लिये तन-मन-जीवन कुरबान करके शहीद होने की भी तैयारी के भावों को प्रगट करते हुये पूजा की पुर्णाहुति करने में आ रही है।

* विशेष जानकारी के लिये इस पूजा के रचनाकार द्वारा लिखित **''चलो गिरनार चले''** पुस्तक अवश्य पढे।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

:: दोहा ::

गिरिना ध्यान थकी सौ, पामशुं भवनो अंत ;
अेह हरख उरमां धरी, रैवतगिरिने भजंत ।

:: ढाल ::

(राग : जिणंदा प्यारा मुणिंदा प्यारा...)

रैवत प्यारो, उज्जयंत प्यारो देखो रे गढ गिरनार ;
देखो रे नेमिनाथ प्यारो ।
शत्रुंजय समो रैवत महिमा,
शास्त्र वयण प्रमाण... ॥१॥
अे गिरि पंचम नाणनो दाता ,
पंचम शिखर वखाण... ॥२॥
घोर पाप कुष्ठादिक रोगो,
रैवत फरशे पलाय ... ॥३॥
इण तीरथ आराधन करतां,
क्रोडगणु फल थाय... ॥४॥
महिमा मोटो अे गिरिवरनो,
पार कदि न पमाय ... ॥५॥
बुद्धिनो लवलेश न मुजमां,
भावथी नमुं गिरिराय... ॥६॥

आज लगी शाश्वतगिरिवरना,
जाण्या न गुण अपार... ॥७॥
पूरव पुण्य पसाये पाम्यो,
हाथ न छोडुं लगार ... ॥८॥
नेमि निरंजन गिरि प्रीते,
आतमराम रंगाय... ॥९॥
निरखी निरखी नेम नगीनो,
नयणा कदि न धराय... ॥१०॥
'हंसगिरि' 'विवेक गिरिवर',
सुणतां चित्त हराया... ॥११॥
'मुक्तिराज ' 'मणिकान्त' 'महायश '
'अव्याबाध ' सुहाय... ॥१२॥
'जगतारण ' ' विलास' 'अगम्य',
नामथी परम निधान... ॥१३॥
हेमवदे गिरि भक्ति काजे,
तन मन मुज कुरबान... ॥१४॥

:: (काव्यम्-अनुष्टुप) ::

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा-केवल सिद्धिदं ;
सदा कल्याणकैः पूतं , वन्दे तं रैवताचलं ।

(अथ मंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।।

इति अेकादश पूजाभिषेके उत्तरपूजा ९९ संपूर्ण।।

* कलश *

(राग : धनाश्री...)

गायो गायो रे गिरनार नेमिनाथ गायो
गिरिगुण के दरिसणथी मेरो, मोह भरम मीटायो ;
श्रुतसागर अवगाहन करतां, गिरिगुण रतन निपायो रे...

गिरिमहिमा गिरिभक्ति-विधिथी, गिरि उद्धार गुण गायो ;
क्षेत्र तणो अे महिमा मोटो, शब्दे कदि न समायो रे ...

पूजा रची गिरिभावे गातां, नयणे नीर झरायो ;
गोमेध सिद्ध अंबिका प्रभावे, कार्य सवि निपजायो रे ...

तपासूरि दान-प्रेम साम्राज्ये, हिमांशु भानु सुपसायो ;
गच्छपति जयघोषसूरिको, दीपे तेज सवायो रे...

प्रेमसूरि शिष्य चन्द्रशेखर के चरणे शीश झुकायो ;
धर्मकृपासे गिरिगुण गातां, वल्लभ पदमें पायो रे ...

दोय सहस दर्शनगुण साले, धूलेटी दिन सुहायो,
हेम बन्यो प्रभु चरण पसाये, आतम अनुभव रसीयो रे ...

इति जिनशासन तपागच्छ मध्ये
प.पू. आ. विजयानंद-कमल-वीर-दानसूरीश्वरजी
महाराजा के शिष्यरत्न
सिद्धांत महोदधि,कर्मसाहित्य निष्णांत, सच्चारित्रचूडामणि
प.पू.आ.श्री **प्रेमसूरीश्वरजी** महाराजा के शिष्यरत्न न्यायविशारद
प.पू.आ. श्री **भुवनभानु सूरीश्वरजी** महाराज के पट्टालंकार
सिद्धांतदिवाकर
प.पू.आ. **जयघोषसूरीश्वरजी** महाराज के पुण्यप्रभावसे
प.पू.आ. श्री **प्रेमसूरीश्वरजी** महाराज के शिष्यरत्न शासनप्रभावक
प.पू.पं.प्र.श्री **चन्द्रशेखरविजयजी** गणिवर्य के शिष्य
प.पू.पं.प्र. श्री **धर्मरक्षित विजयजी** आदि पूज्यो के
शुभाशिषपूर्वक तस शिष्य मुनि श्री **हेमवल्लभ विजयजी** कृत्
श्री गिरनारजी महातीर्थ नव्वाणुं प्रकारी पूजा
सहसावन तीर्थोद्धारक
प.पू. आ.श्री **हिमांशुसूरीश्वरजी** महाराजा तथा
गिरनार तीर्थाधिष्ठायिका सिद्धअंबिका के
दिव्य प्रभाव से गिरनार तलेटी मध्ये वि. स. २०६७ के
धूलेटी दिने समाप्त

वि.सं. २०६७ अक्षयतृतीया के शुभ दिन गिरनारजी महातीर्थ
जयतलेटी मध्ये सर्वप्रथम बार यह पूजा खूब धामधूम पूर्वक
प.पू.पं.प्र. श्री **धर्मरक्षित विजयजी** महाराजा तथा
मुनि श्री **हेमवल्लभविजयजी** महाराजा साहेब की पावन निश्रा
में पढाने में आई है।

अनंत तीर्थंकर परमात्मा के कल्याणको से पावन बने श्री गिरनारजी महातीर्थ के महा कल्याणकारी 108 नाम सहित 108 खमासमणा के दोहे

१. **कैलासगिरी**

कैलासगिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत ;
आगे अनंता पामशे, तीरथकल्प वदंत ।

२. **उज्जयंतगिरि**

उज्ञयंतगिरिवर मंडणो, शिवादेवीनो नंद ;
यदुकुलवंश उजालीयो नमो नमो नेमिजिणंद ।

३. **रैवतगिरि**

रैवतगिरि समरुं सदा, सोरठ देश मोझार ;
मावनभव पामी करी, ध्यावुं वारंवार ।

४. **स्वर्णगिरि**

अेकेकुं पगलुं चढे, स्वर्णगिरिनु जेह ;
हेम वदे भवोभवतणां पातिक थाये छेह ।

५. **गिरनारगिरि**

सोरठदेश मां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार ;
सहसावन फरस्यो नहीं, अेनो अेले गयो अवतार।

६. **नंदभद्रगिरि**

आधि व्याधि उपाधी सौ, जाये तत्काल दूर ;
भावथी नंदभद्र वंदता, पामें शिवसुख नूर ।

७. **पारसगिरि**

लोह जिम कंचन बने, पारसमणी ने योग ;
गिरि स्पर्शे चिन्मय बने, अशोक चंद सुयोग ।

८. **योगेन्द्रगिरि**

मन वच काया योगने, जीत्या जे गिरि मांही ;
तिण कारण योगी तणो, इन्द्र कहायो ज्यांही ।

९. **सनातनगिरि**

गिरि तणा गुणने कहे, तीर्थंकर भगवंत ;
सनातनगिरि मानथी, शिव लहे जीव अनंत ।

१०. **सुरभिगिरि**

दुर्गंधा नारी इणगिरि, गजपद कुंडे स्नान ;
बनी सुगंधी देहडी, सुरभिगिरिने प्रणाम ।

११. **उदयगिरि**

उदय लहे शुभ कर्मनो, अशुभनो थाये जिहां छेदः
अेह गिरिना ध्यानथी, अंते लहे अवेद ।

१२. **तापसगिरि**

तापस पण शिव सुख लहे, अेहवो जेहनो प्रभाव ;
अष्ट कर्मनो क्षय करी, पामे आत्म स्वभाव ।

१३. **आलंबनगिरि**

आलंबन आपी रह्यो, सिद्धिसदन सोपान ;
जे जे जीवडा तेह भजे, झट पामे शिवस्थान ।

१४. **परमगिरि**

गिरिवरोमां परमता, पामी जेह सौभाग्य ;
आनंद आपे सहु जीवने, दूर करी दुर्भाग्य ।

१५. **श्रीगिरि**

श्री गिरि छे अेक अेहवो, प्रिय वस्तुमां अजोड ;
भविक जीव झंखे घणुं, वरवा शिववधू कोड ।

अनंत तीर्थंकर परमात्मा के कल्याणको से पावन बने श्री गिरनारजी महातीर्थ के महा कल्याणकारी 108 नाम सहित 108 खमासमणा के दोहे

१. **कैलासगिरी**

कैलासगिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत ;
आगे अनंता पामशे, तीरथकल्प वदंत ।

२. **उज्जयंतगिरि**

उज्ञयंतगिरिवर मंडणो, शिवादेवीनो नंद ;
यदुकुलवंश उजालीयो नमो नमो नेमिजिणंद ।

३. **रैवतगिरि**

रैवतगिरि समरुं सदा, सोरठ देश मोझार ;
मावनभव पामी करी, ध्यावुं वारंवार ।

४. **स्वर्णगिरि**

अेकेकुं पगलुं चढे, स्वर्णगिरिनु जेह ;
हेम वदे भवोभवतणां पातिक थाये छेह ।

५. **गिरनारगिरि**

सोरठदेश मां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार ;
सहसावन फरस्यो नहीं, अेनो अेले गयो अवतार।

६. **नंदभद्रगिरि**

आधि व्याधि उपाधी सौ, जाये तत्काल दूर ;
भावथी नंदभद्र वंदता, पामें शिवसुख नूर ।

७. **पारसगिरि**

लोह जिम कंचन बने, पारसमणी ने योग ;
गिरि स्पर्शे चिन्मय बने, अशोक चंद सुयोग ।

८. **योगेन्द्रगिरि**

मन वच काया योगने, जीत्या जे गिरि मांही ;
तिण कारण योगी तणो, इन्द्र कहायो ज्यांही ।

९. **सनातनगिरि**

गिरि तणा गुणने कहे, तीर्थंकर भगवंत ;
सनातनगिरि मानथी, शिव लहे जीव अनंत ।

१०. **सुरभिगिरि**

दुर्गंधा नारी इणगिरि, गजपद कुंडे स्नान ;
बनी सुगंधी देहडी, सुरभिगिरिने प्रणाम ।

११. **उदयगिरि**

उदय लहे शुभ कर्मनो, अशुभनो थाये जिहां छेदः
अेह गिरिना ध्यानथी, अंते लहे अवेद ।

१२. **तापसगिरि**

तापस पण शिव सुख लहे, अेहवो जेहनो प्रभाव ;
अष्ट कर्मनो क्षय करी, पामे आत्म स्वभाव ।

१३. **आलंबनगिरि**

आलंबन आपी रह्यो, सिद्धिसदन सोपान ;
जे जे जीवडा तेह भजे, झट पामे शिवस्थान ।

१४. **परमगिरि**

गिरिवरोमां परमता, पामी जेह सौभाग्य ;
आनंद आपे सहु जीवने, दूर करी दुर्भाग्य ।

१५. **श्रीगिरि**

श्री गिरि छे अेक अेहवो, प्रिय वस्तुमां अजोड ;
भविक जीव झंखे घणुं, वरवा शिववधू कोड ।

१६. **सप्तशिखरगिरि**

सातराज पहोंचाडवा, जे धरे सप्त शिखर ;
स्वगुण महेल प्रवेशवा, जे करे मोटु विवर ।

१७. **चैतन्यगिरि**

चैतन्यशक्ति प्रगटतां, आत्मानंद जिहां थाय ;
तेह गिरिना स्मरणथी, चैतन्यपूंज समराय ।

१८. **अव्ययगिरि**

व्यय होवे कर्मो तणो, वली अशुभ परिणाम ;
अव्ययगिरिने वंदता, शुद्ध स्वरुप ने पाम ।

१९. **ध्रुव गिरि**

अेह गिरि छे अनादिथी, काल अनंत रहे जेह ;
भूमितले ध्रुवपणे रही, शाश्वतता लहे तेह ।

२०. **परमोदयगिरि**

ध्यान धरता गिरितणुं, भवचोथे लहे शिव ;
परमोदय आतम तणो, प्रगटावे भवि जीव ।

२१. **निस्तारगिरि**

सहसावने संयमग्रही, गजसुकुमाल मुणिंद ;
रैवत मसाणे शिव लही, निस्तारण गिरिंद ।

२२. **पापहरगिरि**

मातपितानो घातकी, गिरनारे आवंत ;
भीमसेन मुगते गयो, पापहर गिरि सेवंत ।

२३. **कल्याणकगिरि**

अनंत कल्याणक जिन तणा, गिरि शृंगे सोहाय ;
व्रत-केवल-मुक्ति लहे, कल्याणक गिरि जोवाय।

२४. **वैराग्यगिरि**

मेघ परे वरसे सदा, गिरि वैराग्य झरण ;
सिंचे आतम गुणने, परमानंद रमण ।

२५. **पुण्यदायकगिरि**

सुरतरु सम आराधतां, पुण्यदायक गिरिराज ;
ऋद्धि समृद्धि तत्क्षणमिले, वली मले सिद्धिराज ।

२६. **सिद्धपदगिरि**

सिद्धपद अर्पण करे, जेह गिरिनी सेव ;
तिणे कारण वंदीअे सदा, अभेद थई ततखेव ।

२७. **द्रष्टिदायकगिरि**

मिथ्याद्रष्टि भमता भवे, पामें गिरि शरण ;
सुद्रष्टि लहे पंथे रही, द्रष्टिदायक चरण ।

२८. **इन्द्रगिरि**

पडिमा भरावी सुरवरे, पूजा करे त्रिकाल ;
चैत्यद्वारे रक्षा करे, इन्द्र थई रखेवाल ।

२९. **निरंजनगिरि**

स्फटिक जिम छे उजलो, निरंजन निराकार ;
शुद्धातम इण गिरि करे, दीसे अंजन आकार।

३०. **विश्रामगिरि**

इण क्षेत्रे दान तप करे, क्रोड गणुं फल पाम ;
अनंत ऋद्धि निर्मलपणुं, लहेशो गिरि विश्राम ।

३१. **पंचमगिरि**

स्पर्शो पंचम शिखरे, शिवगामी नेमि चरण ;
वरदत्त गणधर पूजो, पामो चरण शरण ।

३२. **भवच्छेदकगिरि**

भवनिर्वेद करी मुनिवरो, अनशन तपे तपंत ;
भवच्छेदकगिरि वंदता, अजरामर पद लहंत ।

३३. **आश्रयगिरि**

द्रव्यभाव शत्रुहणे, आपे मन वांछित ;
गिरिवरनो आश्रय लहे, विश्व बने आश्रित ।

३४. **स्वर्गगिरि**

देवो वास करे जिहां, करवा जन्म पवित्र ;
जाणे स्वर्ग वस्यु तिंहा, तिणे स्वर्गगिरि सिद्ध ।

३५. **समत्वगिरि**

समत्वगुण विलसी रह्यो, महागिरि कणे कण ;
स्मरण दर्शन स्पर्शने, दीये अनुभव मण ।

३६. **अमलगिरि**

विशाल गिरि परशालमां, वास करे भविलोक ;
पाप टले भवतणां, अमलगिरि आलोक ।

३७. **ज्ञानोद्योतगिरि**

भव्यरुपी कमल खीले, ज्ञानोद्योतगिरि तेज ;
गुणश्रेणी प्रकाशमां, पामी सिद्धिनी सेज ।

३८. **गुणनिधि**

गुणनिधि अे गिरि थयो, अनंत जिननो ज्यां ;
प्रगट्यो निज स्वरुपनो, अकल अमल गुण त्यां ।

३९. **स्वयंप्रभगिरि**

स्वयंप्रभा खीली रही, जेनी अनादि अनंत ;
तेह गिरिने वंदता, दोष टले अनंत ।

४०. **अपूर्वगिरि**

अे गिरनारने भेटतां, अपूरव उल्लसे देह ;
करमदल चरण करी, पामे भवि सुख तेह ।

४१. **पूर्णानंदगिरि**

आनंद पूरण जेहना, फरसे ध्याने जेह ;
पूर्णानंदगिरि तेहनुं, नाम थयुं जग तेह ।

४२. **अनुपमगिरि**

वानरीमुख नृपअंगजा, इणगिरि झरणपसाय ;
अनुपम मुखकमल लही, पामे शिव सुखसदाय ।

४३. **प्रभंजनगिरि**

प्रभंजनगिरि अेहथी, पाप प्रणाशन थाय ;
पुण्यपूंज करी अेकठो, सुखपामे वरदाय ।

४४. **प्रभवगिरि**

प्रभवगिरिना प्रभावथी, तिणे शिवपाम्या अनंत ;
पामे छे ने पामशे, लब्धि लही अेकंत ।

४५. **अक्षयगिरि**

हिम सम शीतलता हुवे, करे जीव समतापान ;
आतम सत्ता प्रगट करी, अक्षयपद विसराम ।

४६. **रत्नगिरि**

रत्नबलाह गुफामहीं, रत्नपडिमा शोभंत ;
देव सहाये दरिसण, निकट भवि लहंत ।

४७. **प्रमोदगिरि**

प्रमोद लहे गिरि दर्शने, पूर्णता स्पर्शे पमाय ;
गढ गिरनारनी सहजता, जेह सदा सुखदाय ।

४८. **प्रशांतगिरि**

प्रकर्षथी करे शांत जेह, कर्म वंटोल अतीव ;
प्रशांत गिरिवर तेह छे, वंदु तेहने सदैव ।

४९. **पद्मगिरि**

पद्मतणी परे जिहां सदा, प्रसरे गुण सुवास ;
तेह आपे भवि जीवने, मुक्ति सुख आवास ।

५०. **सिद्धशेखरगिरि**

सिद्धो थकी शेखर थयो, अन्य गिरिमां तेह ;
अनंत जिन निवासथी, पाम्यो मुक्तिरुप जेह ।

५१. **चंद्रगिरि**

चंद्रसम शीतलपणुं, आपे जीवने जेह ;
पाप संताप टले इहां, सुख पामे ससनेह ।

५२. **सुरजगिरि**

सुरज सम प्रतपे बहु, सर्व गिरिमां तेह ;
तेहथी सुरजगिरि कह्युं, नाम अनुपम जेह ।

५३. **इन्द्रपर्वतगिरि**

देवोतणा परिवारमां, शोभे इन्द्र महाराय ;
तिम गिरिमाल मांहे, शोभे तीरथराय ।

५४. **आत्मानंदगिरि**

आतम आनंद जिहां लहे, अनुभवे निरमल सुख ;
काल अनादिना टले, मिथ्या मतिना दुःख ।

५५. **आनंदधरगिरि**

आत्मानंदने पामवा, मुनिवर क्रोडा क्रोड ;
आनंदधर अे गिरिवरे, करतां दोडा दोड ।

५६. **सुखदायीगिरि**

सुखदायी अे गिरि थयो, आपी अनंत सुखशात ;
तेहने पामी भवितणा, टली गया दु;ख व्रात ।

५७. **भव्यानंदगिरि**

अनंत सिद्ध जिहां थया, करी अनशन शुभ भाव ;
भव्यानंद पामी करी, विलसे निज स्वभाव ।

५८. **परमानंदगिरि**

परमानंदने पामतो, दरिसण लहे भवि जेह ;
तेह परम पदवी भणी, गति लहे ससनेह ।

५९. **इष्टसिद्धगिरि**

सर्व शाश्वती औषधि, सुवर्ण सिद्धि रसकूंप ;
पुण्यशालीने गिरि दीये, इष्ट सिद्ध अनुप ।

६०. **रामानंदगिरि**

आतमाराम आनंदमां, झीले जेहनो संग ,
रामानंदगिरि वंदता, पामो सुख असंग ।

६१. **भव्याकर्षणगिरि**

भव्याकर्षणगिरि प्रति, प्रित भविने अतीव ;
जिन अनंत नी प्रगति, आकर्षे ते भविजीव ।

६२. **दुःखहरगिरि**

गोमेधे घणुं दुःख लह्युं, रोगे पीडीयो भमंत ;
थयो अधिष्ठायक गिरि, दुःखहर गिरि भजंत ।

६३. **शिवानंदगिरि**

शिवनो आनंद जे गिरि, चढतां अनुभवे जीव ;
अेहवा ते शिवगिरि प्रति, प्रगटयो नेह अतीव ।

६४. **उज्जवलगिरि**

इण गिरिनी उज्जवलप्रभा, प्रसरे चिंहु दिशे ज्यांय ;
तिंहा थकी तिमिर सहु, झटपट नासे त्यांय ।

६५. **आनंदगिरि**

आनंदना जिंहा समुह छे, अनंत जिननां जेह ;
तेह फरशी भवि लहे, रहेना क्लेशनी रेह ।

६६. **तीर्थोत्तमगिरि**

अे तीरथने भेटतां, सर्व तीरथ फललाध ;
ते तीर्थोत्तम प्रणमतां, सुख मले अव्याबाध ।

६७. **महेश्वरगिरि**

आणा महेश्वरगिरि तणी, त्रण लोके वर्ताय ;
अनंत कल्याणकनी जिंहा, आर्हन्त्य शक्ति समाय ।

६८. **रम्यगिरि**

रम्यता अे गिरि तणी, देखी मोह्युं मन ;
देवो अने विद्याधरो, आवे दोडी प्रसन्न ।

६९. **बोधिदायगिरि**

सदा काल जे वरसतो, गिरि प्रभाव अमंद ;
बोधि बीज वपनकरे, बोधिदाय निर्मद ।

७०. **महोद्योतगिरि**

नेमीश्वर ने गिरि श्यामलो, मन मोहे दिन रात ;
महोद्योत भीतर करे, गुण पेखी सुख शात ।

७१. **अनुत्तरगिरि**

अरिहंत ध्यान परमाणने, ग्रहे अर्हम् पद योग ;
साधे जे भवि ते लहे, अनुत्तर सुखनो योग ।

७२. **प्रशमगिरि**

प्रशमगुण जिंहा उपजे, फरसता जीवने ज्यां ;
तिणे कारण गिरि स्पर्शथी, सुख पामो भवि त्यां ।

७३. **मोहभंजकगिरि**

मोहे पीडीत जीवडा, आवे गिरि सानिध ;
सम्यक्त्व पामी शिव लहे, मोहभंजक गिरि किध ।

७४. **परमार्थगिरि**

अनंत कालथी प्राणीया, सेवे स्वार्थीय भाव ;
गिरि चरण शरण ग्रही, प्रगटे परमार्थ भाव ।

७५. **शिवस्वरुपगिरि**

मन-वच-काया वशकरी, योगी सेवे गिरि आज ;
शिव स्वरुप रस लीये, बनी सदा भृंगराज ।

७६. **ललितगिरि**

गिरि हारमालाओ महीं, मनोहर रुप लहंत ;
तेह गिरि निरखी भवि, ललितगिरि वदंत ।

७७. **अमृतगिरि**

अमृतसम दरिसण लहि, पामे भव्यत्व छाप ;
अमृतगिरि तणी सेवा करे, तेना टले सवि पाप ।

७८. **दुर्गतिवारणगिरि**

आ भवे परभवे भावथी, रैवत भक्ति करंत ,
दु;ख दरिद्र दुर्गति टले, दुर्गतिवारण नमंत ।

७९. **कर्मक्षायकगिरि**

कर्मविडंबना जीवने, वलगी काल अनंत ;
कर्मक्षायक गिरि सेवतां, आतम मुक्ति लहंत ।

८०. **अजेयगिरि**

अजेय जे सवि शत्रुने, चिंता सवि दूर जाय ;
रागद्वेष जीती करी, अरिहंत पदने पमाय ।

८१. **सत्त्वदायकगिरि**

रजस् तमो गुणी आवी, गिरिवर पाद चढंत ;
सत्त्वदायक गिरि बले, क्षपक श्रेणी धरंत ।

८२. **विरतिगिरि**

परमाणु जे सहसावने, दिये विरति परिणाम ;
अंतराय सवि दूरे करी, सप्त गुणठाणु पाम ।

८३. **व्रतगिरि**

हरि पटराणी ने यादवो, प्रद्युम्न शांब कुमार ;
व्रतगिरिअे व्रत ग्रही, पाम्या भवनो पार ।

८४. **संयमगिरि**

जिन अनंता सहसावने, नेमिप्रभु ठवे पाय ;
संयम ग्रही मनःपर्यवी, ध्यानधरी मुगते जाय ।

८५. **सर्वज्ञगिरि**

रवि लोक प्रकाशतो, सर्वज्ञ लोकालोक ;
मोह तिमिर दूरे टले, चेतन शक्ति आलोक ।

८६. **केवलगिरि**

अेक अेक प्रदेशमां, गुण अनंतनो वास ;
इण गिरि केवल लई, भोगवे लील विलास ।

८७. **ज्ञानगिरि**

सहजानंद सुख पामीयो, ज्ञान रस भरपूर ;
तेहना बलथी में हण्यो, मोह सुभट महाक्रूर ।

८८. **निर्वाणगिरि**

जे गिरिअे अनंता, निर्वाण पाम्या जिन ;
ते निर्वाणगिरि पर, कोई नहिं दीन हिन ।

८९. **तारकगिरि**

आंगणुं अे गिरि तणुं, पामें जल थल जेह ;
भव सातमें मुक्ति लहे, तारक णुं गुण गेह ।

९०. **शिवगिरि**

राजीमति ने रहनेमि, सहसावने दीक्षा लीध ;
वली शिवपद पामीया, इणगिरि अनशन कीध ।

९१. **हंसगिरि**

हंस परे निर्मल करे, परिणति शुद्ध सदाय ;
जेह गिरि साँनिध्यथी, अनुपम गुण पमाय ।

९२. **विवेकगिरि**

विवेकगिरि आतम तणो, देह थकी जे भिन्न ;
ध्यान धारा मांही लहे, परम सुख अभिन्न ।

९३. **मुक्तिराजगिरि**

मुगतिना मुगट समो, शोभे अे गिरिराज ;
मुक्तिराज अे गिरि थयो, आपे सिद्धनुं राज ।

९४. **मणिकान्तगिरि**

मणिसम कान्ति जेहनी, दीपे सदा दिनरात ;
भविक लोकनी द्रष्टिमां, दीसे ते भलीभात।

९५. **महायशगिरि**

महान यशने पामीयो, अनंतजिन जिहां सिद्ध ;
तेहनी तुलनामां नहीं, अन्य कोइ प्रसिद्ध ।

९६. **अव्याबाधगिरि**

त्रण लोकमां सुरनरो, गिरि आकार पूजंत ,
संसार बाधा छेदीने, अव्याबाध भजंत ।

९७. **जगतारणगिरि**

जगतना जीवो सहु, पामी तरे संसार ;
अेह गुण छे गिरितणो, न लहे फरी अवतार ।

९८. **विलासगिरि**

अे गिरिनो विलास जे, प्रसरे त्रिहुं जगमांय ;
आतम शक्ति प्रगटाववा, भविजन आवे त्यांय ।

९९. **अगम्यगिरि**

अगम्य गुण छे जेहना, पार न पामे कोई
केवली अेह जाणी शके, कही न शके ते जोई ।

१००. **सुगतिगिरि**

प्राचीन पडिमा विश्वमां, दरिसणे दुर्गति जाय ;
पूजो प्रणमो भावथी, सुगतिगिरिना पाय ।

१०१. **वीतरागगिरि**

कर्म रेणु दूरे करे, रैवत भक्ति समीर ;
वीतरागगिरि बले, मुक्त बनी रहे स्थिर ।

१०२. **चिंतामणीगिरि**

भाव चिंतामणी गिरि दीये, गुणरत्नो क्रोडा क्रोड ;
इच्छित सर्व शिघ्र फले, भेटवा मन धरे दोड ।

१०३. **अतुलगिरि**

अनंत कल्याणको थकी, मेरु सम गिरि अतुल ;
अन्य गिरि तुलना नहीं, भाँखे ऋषभ अमूल ।

१०४. **महावैद्यगिरि**

भव रोग पीडतो मने, जन्मजरा मृत्यु दु:ख ;
गुण योगे रोग वारजो, महावैद्यगिरि दीये सुख ।

१०५. **पावनगिरि**

त्रस स्थावर गिरि खोळे, कर्म मलथी अपवित्र ;
''मा'' बालने पुनित करे, तिम पावन गिरि धरे हित ।

१०६. **अचलगिरि**

त्रिकल्याणक परमाणुओ, काल असंख्य अविचल ;
रत्नत्रयी अविचलदीये, अचलगिरि परिबल ।

१०७. **लब्धिगिरि**

अनंत लब्धि इहां उपनी, गणधर मुनि महंत ;
आत्म लब्धिगिरि नमो, भावे भजो भगवंत ।

१०८. **सौभाग्यगिरि**

अेकसौ आठ शिखर महीं, सौभग्यशाली गिरि शृंग ;
त्रिकल्याणक इण गिरि, रहे प्रतिकाल उत्तंग ,
गुण केटला गिरि तणा, गाई शकुं मति मंद ;
बृहस्पति न गणी शके, गुणवंतगिरि अमंद ।

श्री गिरनार महातीर्थ के शास्त्रानुसार ६ आरे में ६ नाम सुनने में आये है, परंतु तीर्थभक्ति के लिए गिरनार के विविध गुणानुसार यह १०८ नाम और दोहे की रचना करने में आई है।

नित्य आराधना योग्य
श्री गिरनार महातीर्थ के खमासमणा के दोहे :

रैवतगिरि समरूं सदा, सोरठ देश मोझार ;
मावनभव पामी करी, ध्यावुँ वारंवार... ।।१।।
सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ **गिरनार** ;
सहसावन फरश्यो नहीं, अेनो अेले गयो अवतार ।।२।।
दीक्षा केवल सहसावने, पंचमे गढ निर्वाण ;
पावनभूमिनें फरशता, जन्म सफल थयो जाण...।।३।।
जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार ;
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेमकुमार ...।।४।।
कैलास गिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत ;
आगे अनंता पामशे, तीरथ कल्प वदंत...।। ५ ।।
गजपद कुंडे नाहीने, मुखबांधी मुखकोश ;
देव नेमिजिन पूजतां, नाशे सघला दोष... ।।६।।
अेकेकुं पगलु चढे, **स्वर्णगिरि** नुं जेह ;
हेम वदे भवोभवतणां, पातिक थाये छेह ...।।७।।
उज्जयंत गिरिवर मंडणो, शिवादेवी नो नंद ;
यदुकुल वंश उजालीयो, नमो नमो नेमिजिणंद ...।।८।।
आधि व्याधि उपाधि सहू, जाये तत्काल दूर ;
भावथी **नंदभद्र** वंदता, पामे शिवसुख नूर ...।।९।।

अवसर्पिकणी के छ आरे में
इस तीर्थ के अनुक्रमे ६ नाम :

१. कैलास, २. उज्जयंत, ३. रैवत, ४. स्वर्णगिरि,
५. गिरनार, ६. नंदभद्र

एक खमासमण देकर श्री रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं. रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं करेमि काऊस्सग्गं, वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कार वत्तियाए, सम्माण वत्तियाए, बोहिलाभ वत्तियाए, निरुवसग्ग वत्तियाए , सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वाय-निसग्गेणं भमलीए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं , सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं , एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो , जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि । (९ लोगस्स का काउस्सग्ग न आवे तो ३६ नवकार का काउस्सग्ग करके... प्रगट लोगस्स बोलना)

श्री नेमिनाथ भगवान का जाप

ॐ ह्रीँ अर्हम् श्री नेमिनाथाय नमः (२० माला गिने)

श्री गिरनार महातीर्थ की 99 यात्रा की विधि

श्री गिरनार महातीर्थ जहाँ पूर्व में अनंत तीर्थंकरों के कल्याणक एवम् वर्तमान चौविसी में बावीशवें तीर्थंकर बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा के दीक्षा-केवलज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक के द्वारा यह पुनितभूमि पावनकारी बनी है। आने वाली चौवीशी में इसी तीर्थ से २४ तीर्थंकर मोक्ष पधारेंगे। इस महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि का शास्त्रोंमें कोई विशेष उल्लेख नहीं आता है। परन्तु पश्चिम भारत की एक मात्र कल्याणक भूमी जहाँ पर तीन कल्याणक होने से इस महाकल्याणकारी भूमी के दर्शन-पूजन और स्पर्शन के द्वारा अनेक भव्यात्माए आत्म- कल्याण की आराधना में विशेष वेग ला सके, इस उद्देश्य से पुष्ट आलंबन रुप गिरनार गिरिवर की ९९ यात्राओं का आयोजन किया जा रहा है। वर्तमान काल की परिस्थति को ध्यान में रख कर निचे मुजब यात्रा कर सकते हैं।

गिरनार के पाँच चैत्यवंदन और ९९ यात्रा की विधि :-

१. जयतलेटी में आदिनाथ भगवान के जिनालय में ।

२. जय तलेटी में नेमिनाथ परमात्मा की चरण पादुका सन्मुख ।

३. बाद में यात्रा करके दादा की प्रथम टूंक में मुलनायकजी के सामने ।

४. मुख्य मंदिर के पीछे आदिनाथ मंदिर में ।

५. अमिझरा पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन करना अथवा नेमिनाथ भगवान के चरण पादुका के सामने ।

गिरनार गिरिवर की ९९ यात्रा कैसे करनी ?

वहाँ से सहसावन(दिक्षा-केवलज्ञान कल्याणक भूमी) अथवा जय तलेटी आने से प्रथम यात्रा पूर्ण हुई समझना। फिर से जयतलेटी या सहसावन से उपर चढने पर पहले की तरह दो चैत्यवंदन करना। इस तरह दोनों में से कोई भी स्थान से फिर से दादाजी की टुंक दर्शन, चैत्यवंदन करके यह दो स्थानों में से नीचे उतरने पर दुसरी यात्रा गिनी जायेगी। बस इस तरह १०८ बार दादाजी की टुंक की स्पर्शना करना आवश्यक है।

नित्य आराधना :

१. दोनों समय प्रतिक्रमण, २. जिन पूजा और कम से कम एक समय दादा का देववंदन। ३. कम से कम एकासना का पच्चक्खाण, ४. भूमी संथारा, ५. हर यात्रा में मूलनायक की ३ प्रदक्षिणा, ६. "उज्जिंत सेल सिहरे दीक्खा नाणं निस्सीहीआ जस्स, तं धम्म चक्क वट्टीं अरिट्ठनेमिं नमंसामि या ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथाय नमः की २० माला गीने, ७. गिरनार महातीर्थ के ९ खमासमणा।

विशेष आराधना :

१) ९९ यात्रा दौरान १ समय मुलनायकजी दादा की १०८ प्रदिक्षणा और १०८ लोगस्स का काउस्सग,२) पुरे गिरनार गिरिवर की प्रदक्षिणा (अंदाज २८ कि.मी.) , ३) ९ बार पहेली टूंक के सभी मंदिरों के दर्शन, ४) १ बार चौविहार छट्ठ करके ७ यात्रा, ५) यात्रा दरम्यान एक बार गजपद कुंड के जल से स्नान करके परमात्मा की पूजा करना।

गिरनार की 99 यात्रा से आप डर गये क्या ? इसमें डरने की कोई बात नही है- सच्चाई तो यह है कि शत्रुंजय की 99 यात्रा से गिरनार की 99 यात्रा काफी सरल है। हा ! हा ' इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है।

* शत्रुंजय की प्रथम यात्रा में लगभग 3600 सिढ़ीयाँ है। गिरनार की पहली यात्रा में लगभग 3840 सिढ़ीया है।

* शत्रुंजय की दुसरी यात्रा के लिये घेटीपाग की 2800 सिढ़ीयाँ उतरने में आती है, जबकी गिरनार में दुसरी यात्रा के लिये 1000 सिढ़ीयाँ डिस्काउन्ट के साथ सहसावन तक मात्र 1800 सिढ़ीयाँ उतरनी पडती है।

* शत्रुंजय की तीसरी यात्रा में जितनी सिढ़ीयाँ होती है उससे कम सिढ़ीयों में गिरनार की चार यात्रा होती है और शत्रुंजय की पाँच यात्रा में जितनी सिढ़ीयों होती है उससे कम सिढ़ीयों में गिरनार की सात यात्रा होती है। इस प्रकार गिरनार की 99 यात्रा बहुत की सरल है इसमें थोडा भी भय नहीं रखे ।

किसी भी डर के बिना गिरनार की 99 यात्रा के अमूल्य लाभ से चूके नहीं। विशेष जानकरी के लिये इस पूजा के रचनाकार के द्वारा लिखी पुस्तक " **चलो गिरनार चले...**" अवश्य पढे।

आन्ध्रप्रदेश में गिरनार भावयात्रा एवं नेमि प्रभु की यात्रा की यशोगाथा

प.पू.पं.प्र. श्री धर्मरक्षितविजयजी म.सा. की शुभ प्रेरणा और आर्शीवाद से आन्ध्रप्रदेश के जैन संघों को श्री गिरनार महातीर्थ की महिमा का पता चले एवं दक्षिण भारत के प्रमुख क्षेत्र को गिरनार तीर्थ से जोडने हेतु कई शहरों में '' गिरनार गैरव गाथा '' (भावयात्रा) का आयोजन किया गया।

इस शुभ कार्य की शरुआत २ अक्टुबर २०१५ को गुन्टूर में हुई, फिर विजयवाडा, नेल्लोर, काकिनाडा, राजमहेन्द्री, तेनाली, ऐलुरु, तणुकु, नरसापुर, गुडिवाडा आदि शहरों में भी भाव-यात्रा का भव्य आयोजन किया गया।

नेमिनाथ दादा की असीम कृपा और पूज्यश्री के तप के प्रभाव से कई भाविको ने शिघ्रातिशीघ्र गिरनार तीर्थ के दर्शन हेतु तो किसीने कम से कम वर्ष में १ बार गिरनार की स्पर्शना करने का नियम लिया। संजयभाई बाऊ, केतनभाई देढीया, सुरेशभाई (चैन्नई) और श्री जैन युवा संगठन-गुन्टूर के सदस्यो ने सभी को भाव विभोर कर दिया। इन्ही कार्यक्रमों में कई पुण्यशालीयों ने गिरनार की ९९ यात्रा के लाभार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया और ऐतिहासिक बनने जा रही ९९ यात्रा के २१२ लाभार्थी बने।

वैसे भी पुज्यश्री की गिरनार पर हमेशा से ही सामुहिक आयोजन करने की भावना रही है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को

गिरनार की भक्ति का मौका मिले और अनुक्रम से यह भक्ति प्रिती बनकर मुक्ति कारक बने ।

इन १२ महिनों में आन्ध्रप्रदेश में गिरनार से संबंधित कई कार्यक्रम हुए जैसे कि लोगों के दिलों में से गिरनार कि यात्रा कठिन है ऐसी अवधारणा एवम् ९९ यात्रा का भय निकालने हेतु बडे शहरों में ९९ प्रचार अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके फल स्वरुप कई भाविक ९९ यात्रा करने आगे आये और आन्ध्र में करिब २२० यात्रिको ने ९९ यात्रा के लिये आवेदन पत्र भरें।

फिर तीसरे चरण में पुज्यश्री की प्रेरणा से गिरनार दर्शन धर्मशाला से श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमाजी को विनय पूर्वक आन्ध्रप्रदेश लाया गया एवं यहाँ के सभी संघों में भगवान का भव्यातिभव्य पक्षाल, अष्टप्रकारी पूजा एवं आरती आदि कार्यक्रम हुए । गिरनार तीर्थ में श्री नेमिनाथ प्रभु का पक्षाल विश्व विख्यात है। कई लोगो का यह अनुभव है कि प्रभु का पक्षाल जो करता है वह तो धन्य होता ही है और जो पक्षाल देखते है वो भी धन्यता का अनुभव करते है। तो बिलकुल ऐसा ही पक्षाल (गिरनार की तर्ज पर) एवं पुष्पवृष्टी सब संघों में करवाये गये जिसको देखकर सब भावित हुए। सब नेमिप्रभु की भक्ति में भावविह्वल होते हुए सब जल्द से जल्द साक्षात गिरनार के पक्षाल को देखने के लिए उतावले होने लगे।

इस प्रकार पिछले वर्ष आन्ध्रप्रदेश के लिये रैवतगिरि और नेमिनाथ के नाम कि पावन गुंज हुई और समस्त आन्ध्र गिरनारमय बन गया।

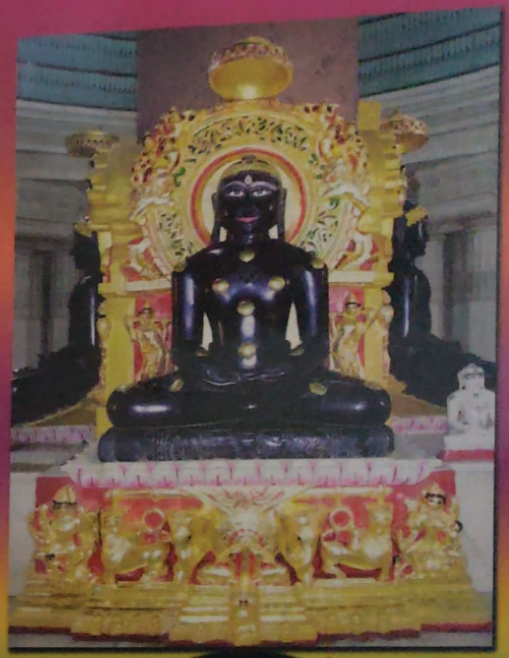

समवसरण मंदिर- सहसावन

(दीक्षा कल्याणक भूमि)

(केवलज्ञान कल्याणक भूमि)

चेतन ग्राफिक्स, गुन्टूर : 09440373914